लकर स्वयं अनेक दुःख सहने पर भी तन, मन धन से इस संसार की सेवा में तत्पर रहते हुए गुणरूपी रत्नों से अपने कुल तथा देशको जटित करके चमकीला बना देते हैं। इस विषय में सत्यप्रतिज्ञ व नीतिनिपुण पण्डितवर चाणक्य ने कहा है कि—

> एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना ।
> वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा ॥

अर्थ ॥

जैसे प्रफुल्लित ( अच्छी तरह फूला हुआ ) उत्तम जातिका एकही वृक्ष मनोहर सुगन्ध से सारे वन को सुगन्धित करता है वैसे ही एक सुपुत्र अपने उत्तम गुणों से कुल को सुभूषित करदेता है ॥

प्रिय पाठकवृन्द ! ऐसे उत्तम पुरुष प्रायः जगत् में थोड़े उत्पन्न होते हैं। एक कविने लिखा है कि—

( आर्या )

> सम्पदि यस्य न हर्षो, विपदि विषादो रणे न भीरुत्वम् ।
> तम्भुवनत्रयतिलकं जनयति जननी सुतं विरलम् ॥

अर्थ ॥

जिसको सम्पत्ति प्राप्त होने पर हर्ष नहीं और विपत्ति की दशा में शोक नहीं तथा युद्ध में डरपोकपन नहीं होता ऐसे तीन लोक के तिलक ( ललाटभूषण ) अर्थात् अग्रगण्य पुत्र को माता विरला ही जनती है।

यथार्थ में देखा जाय तो ऐसे पुरुषों का ही जन्म होना सार्थक है कि जिनसे वंश तथा देश को लाभ पहुंचे। किसी कवि का वाक्य है कि—

स जातो येन जातेन याति वंश समुन्नतिम् ।
परिवर्त्तिनि ससारे मृतः को वा न जायते ॥

अर्थ ॥

जिसके पैदा होने से कुल की उन्नति होती है वही पैदा हुआ माना जाता है, इस परिवर्तनशील संसार में मरा हुआ कौन ( जीव ) जन्म नहीं लेता, अर्थात् सब जीव ( जब तक मोक्ष के अधिकारी न हों ) अपने कर्मानुसार शरीर धारण करते ही हैं।

सज्जन गण ! जब ऐसे सत्पुरुष किसी जाति में जन्म लेते हैं तब केवल वह जाति ही नहीं किन्तु देश भर उन्नति के शिखर पर आरूढ हो जाता है, यह बात निःसन्देह है

उन परोपकारी महात्माओं के भी शरीर तो "शतायुर्वैपुरुष" इत्यादि वाक्यानुसार ईश्वरीय नियम से केवल पुण्यायुष पर्यन्त ही रहते हैं परन्तु उनके देशोपकार कार्य मृत्यु के पीछे भी जीवित दशा की भांति विद्यमान रहकर उनके यश व कीर्त्ति को प्रसारित करते हैं।

यह कहावत है "कीर्त्तिर्यस्य स जीवति" अर्थात् जिसकी संसार में कीर्त्ति है मानो वह स्वयं जीता है।

महाशयो ! विचार करने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इस संसार में जितने बड़े आदमी हुये हैं उन सबों ने इसी कारण से अपने पञ्चभौतिक स्थूल शरीर की परवाह न करके अपने यशरूप सच्चे शरीर की रक्षा करने में अनेक असह्य दु:ख उठाये हैं । एक विद्वान ने यह लिखा है कि—

शरीरस्य गुणानां च दूरमत्यन्तमन्तरम् ।
शरीरं क्षणविध्वंसि कल्पान्तस्थायिनो गुणाः ॥

अर्थ ॥

मनुष्य के स्थूल शरीर और गुणों में बहुत बड़ा अन्तर है, क्योंकि शरीर तो क्षण भर में नष्ट होनेवाला है और गुणों का नाश कल्प के अन्त तक नहीं होता ।

यद्यपि ऐसे पुरुषों के काम चिरस्थायी होते हैं तथापि जो न लिखकर प्रसिद्ध न किये जावें तो समय के व्यवधान से कालान्तर में लोग उन्हें भूल जाते हैं इस कारण ऐसे पुरुषों के उत्तम कर्मों को अमर करने के लिये उनका जीवनचरित्र लिखकर सर्वसाधारण के सामने रखना हमारा मुख्य कर्तव्य है जिससे हरएक बुद्धिमान् उन के कार्यों का अनुकरण करके वैसे ही कर्म करता हुआ अपने कुल तथा देश की उन्नति करने का प्रयत्न करे । इस विषय में एक कविने बहुत ठीक लिखा है कि—

(दोहा)

दसैं पूर्व बडन का, चरित विचित्र विशाल ।
होत हमें विश्वास यह, भलीभांति सब काल ॥ १ ॥

हमहुं चहत यदि करिसकत, एस काज अनेक ।
जासों या जग में रहै, सुमिरन चिह्न सुएक ॥ २ ॥

अर्थ ॥

*पिछले महानुभावों के अद्भुत व बड़े चरित की ओर ध्यान देने से हमें हरसमय यह विश्वास पूर्ण रीति से होता है कि यदि हम भी चाहें तो ऐसे अनेक काम कर सकते हैं जिनसे कि इस जगत् में एक ( हमारा भी ) स्मरणचिन्ह बना रहे ।*

*ऐसे सुशिक्षित मनुष्य बहुत कम होंगे कि जिन्हें पृथ्वी के बड़े बड़े आदमियों के जीवनचरित सुनने की अभिलाषा न हो, विशेष कर अपने देश तथा जाति में जो महान पुरुष हो गये हैं उनका वृत्तान्त जानने की तो उन्हें अत्यन्त ही उत्कण्ठा लगी रहती है । विचार करने से यह स्पष्ट दीख पड़ता है कि बड़ों का जीवनचरित जानने की इच्छा मनुष्य के अन्तःकरण में स्वाभाविक रहती है, यहांतक कि मूर्ख से मूर्ख ग्रामीण जंगली जाति के लोग भी अपने देवता अथवा बड़े आदमियों के जीवनचरित को अपनी भाषा में गाते हुए मारे आनन्द के मस्त होजाते हैं ।*

*इसलिये मायामनुष्य प्रभु रामकृष्ण आदि के चरितों को पढ़ सुन कर विद्वान् लोग बाह्याभ्यन्तर शुद्ध होजाते हैं महात्मा तुलसीदासजी ने कहा है कि बारक राम कहत जग जेऊ होत तरन तारन नर तेऊ तथा उनके भक्तों के चरितों ने इस कराल कलिकाल में धर्मवृक्ष के शुष्क होने पर भी उसके मूल*

को दृढ़ कर रक्खा है। इसलिये कहा गया है कि जीवनचरित्र ही जीवनसुधार का एक मुख्य साधन है।

नाना देशों के इतिहास पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि जीवनचरित्र ने कई जातियों की दशा पलट दी है और आलसी हुए डरपोक तथा अधर्मियों को बड़े पुरुषार्थी सज्जन वीरधीर तथा धर्मात्मा बनादिये हैं। यह बात गुप्त नहीं है कि यूरुप अमेरिका जापान आदि देशों को भूतपूर्व महाशयों के अनुकरणीय जीवनचरित्र ने ही उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया है।

इस विचार से मेरे पितामह रायबहादुर महता विजयसिंहजी साहिब जो कि भूतपूर्व महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १ ८ श्री तख्तसिंहजी साहिब बहादुर जी सी एस आई व महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १ ८ श्री जसवन्तसिंहजी साहिब बहादुर जी सी एस आई के समय में दीवान थे तथा जिनकी स्वामिभक्ति स्मरणशक्ति कार्यकुशलता जितेन्द्रियता वीरता प्रजावत्सलता दातृता तथा ईश्वरभक्ति आदिकी महत्ता तमाम राजपूताने में प्रसिद्ध है और जिन्होंने प्रजाको प्रसन्न रखकर श्रीमहाराजासाहिब तथा गवर्नमेन्ट की सेवा सच्चे अन्तःकरण से की है उनके जीवन का जो कुछ वृत्तान्त उनके तथा उनके समानवयस्क आप्त पुरुषों के मुख से मैंने सुना और स्वयंद्वारा जाना व कुछ प्रत्यक्ष देखा है वह मैं आप सज्जनों के सम्मुख प्रेमपूर्वक निवेदन कर प्रार्थना करता हूं कि आप लोग इसे पढ़ कर मेरे श्रमको सफल करेंगे।

महता कृष्णसिंह

वैदिक-यन्त्रालय अजमेर

॥ श्रीः ॥

युत महता विजयसिंहजी का वृत्तान्त लिखने के पहिले उन्होंने जिस वंश को अपने जन्म से सुशोभित किया, उसका तथा उस वंश के प्रसिद्ध पुरुषों का भी संक्षेप से वर्णन करना यहाँ पर आवश्यक है।

राष्ट्रवर ( राठौड़ ) राव सीहाजी के पुत्र आसथानजी ने कन्नौज से संवत् १२६२ में मारवाड़ में आकर परगने मालानी के गाँव खेड़ में संवत् १२३७ में अपना राज्य स्थापित किया, उस समय ३४० गाँव उनके आधीन में थे।

उनके पुत्र धूहड़जी संवत १२६१ में राज्य के उत्तराधिकारी हुए।

धूहड़जी के पुत्र रायपालजी १ ८५ में सिंहासनारूढ़ हुए।

रायपालजी के १३ (तेरह) पुत्र थे, उनमें से ज्येष्ठ पुत्र राव कानपालजी तो संवत् १३०१ में राज्य के अधिपति हुए और चतुर्थ पुत्र मोहनजी थे, उनका प्रथम विवाह तो जैसलमेर के भाटी जोरावरसिंहजी की पुत्री से हुआ, जिससे कुँवर भीमराजजी पैदा हुए, उनके वंश के भीमावत राठोड़ कहलाते हैं।

बाद में मोहनजी ने जैनधर्म के उपदेशक शिवसेन ऋषीश्वर के उपदेश से जैन मत का अवलम्बन कर दूसरा विवाह परगने भीनमाल के गांव चमपदरिये में ओसवाल जाति के श्री श्रीमाल जीवणोत आपूजी की कन्या से किया, जिससे संपतसिन ( सपटसनजी ) उत्पन्न हुए।

इन्होंने भी अपने पिता के तुल्य संवत् १३ १ के कार्तिक सुदी १३ को जैनधर्म का उपदेश लिया, उनके वंश के मोहणोत ओसवाल कहलाते हैं।

महता विजयसिंहजी मोहणजी से सत्ताइसवीं पीढ़ी में हुये हैं।

——— ———

## राष्ट्रवर ( राठोड ) रायपालजी ॥

१ मोहणजी ( प्रथम )
२ सपटसेनजी
३ महेशजी
४ देवीचन्द्रजी ( प्रथम )
५ शार्दूलजी
६ दवीदासजी
७ खेतसीजी
८ अमरसीजी
९ महराजजी
१० भीमचन्द्रजी
११ भोजराजजी
१२ कालूजी
१३ वस्तोजी
१४ मोहणजी ( द्वितीय )
१५ साँवतसीजी
१६ नगराजजी
१७ सूजाजी
१८ अर्जुनजी
१९ रोहीदासजी
२० रायचन्द्रजी
२१ वर्द्धमानजी
२२ कृष्णदासजी
२३ आसकरणजी
२४ देवीचन्द्रजी ( द्वितीय )
२५ चैनसिंहजी
२६ करणसिंहजी

मोखमसिंहजी — २७ विजयसिंहजी — छत्रसिंहजी

पद्मसिंहजी, वख्तसिंहजी (मोखमसिंहजी के) — २८ सरदारसिंहजी — जालमसिंहजी (छत्रसिंहजी के)

श्यामसिंह (पद्मसिंहजी के) — भांजुसिंह (वख्तसिंहजी के) — २९ कृष्णसिंह — सालमसिंहजी (जालमसिंहजी के)

सौंपतसिंहजी (सालमसिंहजी के)

इस वंश में जिन २ पुरुषों के राज्य सत्ता आदि उत्तम कार्य मुख्य ज्ञात हुये हैं, व निम्नलिखित हैं:—

## ( ७ ) खेमसीजी ॥

संवत् १४४४ में राव चूंडाजी ने जब खेड से आकर मंडोर में राज्य स्थापन किया तब साथ आये ।

## ( ६ ) महाराजजी ॥

राव जोधाजी के साथ संवत १५१५ में मंडोर से जोधपुर आये, दीवानगी तथा प्रधानगी का काम किया, संवत् १५२६ में श्री दरबार ने प्रसन्न होकर इनके रहने के लिये फतहपोल के समीप एक हवेली बनवादी

## ( २० ) रायचन्द्रजी ॥

श्रीमान् मरुधराधीश श्री १ ८ श्री सवाई राजा शूर सिंहजी के सहोदर कनिष्ठभ्राता श्रीमान कृष्णसिंहजी को जागीर में सामत परगने के गांव दूदोद आदि १२ गांवों का पट्टा मिला और संवत् १६५२ में इन्होंने अपने पट्टे के गांव दूदोद में जा निवास किया फिर संवत् १६५४ में अजमेर के सूबेदार नव्वाब मुरादअली के द्वारा बादशाह अकबर की सेवा में पहुंच बादशाह ने इन की सेवा से प्रसन्न होकर संवत् १६५५ में हिंडान आदि सात परगने प्रदान किये संवत् १६५८ में महाराज कृष्णसिंहजी ने

अपने नाम से एक नूतन नगर बसाकर उस का नाम कृष्णगढ़ रक्खा ।

जब महाराज कृष्णसिंहजी ने जोधपुर से प्रयाण किया तब महता रायचन्द्रजी तथा उनके कनिष्ठभ्राता शंकर मणिजी ये दोनों उक्त महाराज की सेना में उपस्थित थे, सो कृष्णगढ़ बसाने तक इन दोनों भाइयों ने अहर्निश महाराज की सेवा सच्चे अन्तःकरण से की, इन की सेवा से सन्तुष्ट होकर गुणग्राही महाराजा साहिब ने राज्य स्थापित होनेपर प्रथम ही रायचन्द्रजी को मुख्य मन्त्री नियत किया और इन दोनों भाइयों के रहने के लिये दो बड़ी २ हवेलियां बनवाईं, जो बड़ी पौल और छोटी पौल के नाम से अभी तक प्रसिद्ध हैं।

रायचन्द्रजी ने एक जैनमन्दिर श्री चिन्तामणि पार्श्व नाथजी का संवत् १६७० में बनवाना प्रारम्भ किया और संवत् १७०२ में उसकी प्रतिष्ठा की, यह मन्दिर यहां पर ( कृष्णगढ़में ) अबतक विद्यमान है।

कृष्णगढ़ाधीश महाराज श्री मानसिंहजी भी अपने पुरुषपरमागत वृद्ध तथा आनुवंशिक मुख्य मन्त्री महता रायचन्द्रजी से अत्यन्त प्रसन्न थे उन्होंने सं० १७१६ के वर्ष में किसी महोत्सव पर इनकी हवेली में पधारकर वहीं भोजन करके इन का मान किया।

सं० १७१७ में उक्त महाराजा साहिब ने इनको एक पाखड़ी नाम ग्राम प्रदान किया था ।

सं १७२२ में इनका देहान्त हो गया ।

## ( २१ ) वृद्धभानजी ॥

ये महाराज श्री मानसिंहजी के तन दीवान थे इस कारण ये हरसमय महाराज की सेवा में उनके साथ ही रहा करते थे ।

संवत् १७६५ में इन का देहान्त हुआ ।

## ( २२ ) कृष्णदासजी ॥

ये महाराज श्री मानसिंहजी के समय में राज्य के मुख्य मन्त्री थे ।

महाराजा साहिब तो विशेषकर बादशाह औरंगजेब की सेवा में विराजते थे इस कारण से राज्य के सब काम इन्हीं के अधिकार में थे ।

सं १७५० में श्री दरबार साहिब ने प्रसन्न होकर "बुहारू" गांव इन को प्रदान किया वह इन की विद्यमान दशा ( मौजूदगी ) तक बना रहा ।

सं १७५६ में नव्वाब अबदुल्लाहखाँ जब कृष्णगढ़ में

बादशाही थाना नमान की फौज लकर यह आया तब इन्होंने उस के साथ युद्ध करके उसे पराजित किया ।

सं० १७६३ में इन का देहान्त होगया ।

## ( २३ ) आसकरणजी ॥

महाराज श्री राजसिंहजी के समय में सं० १७६५ में ये मुख्य दीवान नियत किए गये ।

सं० १८१६ में इन्होंने आस्तिक माता का एक मन्दिर बनवाया, यह शहर (कृष्णगढ़) से दक्षिण की ओर पञ्च मुखी हनुमानजी के पास अभीतक विद्यमान है ।

## ( २४ ) देवीचन्द्रजी ॥

ये रूपनगर क महाराज श्री सरदारसिंहजी के समय में उस राज्य क मुख्य दीवान थे ।

## ( २५ ) चैनसिंहजी ॥

महाराज श्री प्रतापसिंहजी क समय में संवत् १८४३ के आषाढ़ शुक्ला ७ सप्तमी क दिन स ये कृष्णगढ़ राज्य क मुख्य दीवान नियत हुए सो महाराज श्रीकल्याणसिंहजी के समय में संवत् १८६१ में देहान्त होने पर्यन्त इस काम को बराबर करते रहे ।

इन्हों ने पूर्ण सत्यता व स्वामिभक्ति से राज्य का काम किया, जिससे इनकी सभी सेवा से प्रसन्न होकर महाराज श्रीप्रतापसिंहजी ने यह वाक्य फर्माया "मैंने बिना सब चोर मुसद्दी" सो यह कहावत उस राज्य में अबतक प्रसिद्ध है।

इनकी दीवानगी के समय में मरहटों ने उक्त राज्य पर बहुत समय आक्रमण किया था, परन्तु इन्होंने अपनी योग्यता तथा राजनीति से उनको कभी कृतकृत्य न होने दिया।

## ( २६ ) करणसिंहजी ॥

महाराज कल्याणसिंहजी ने इनके पिताजी का देहान्त होने पर संवत् १८६१ में इनको अपने राज्य का मुख्य मन्त्री नियत किया सो संवत् १८७७ तक ये अविच्छिन्न रूप से उस काम को करते रहे।

उस समय के बीच में मरहटा सेंधिया और अजमेर के इस्तमुरारदारों के साथ बहुत समय युद्ध हुआ, उनमें इन्होंने बुद्धिमानी व शूरता के साथ अपने स्वामी की पूर्ण सेवा की और इन्होंने सं० १८७७ से १८८६ तक चार दफे दीवानगी का काम किया।

संवत् १८८६ के ज्येष्ठ सुदी ८ अष्टमी के दिन श्रीपुष्कर तीर्थ पर इस विनश्वर शरीर का त्याग कर इन्होंने स्वर्ग की ओर प्रयाण किया।

## ( २७ ) मोखमसिंहजी ॥

इन्होंने संवत् १८८६ से संवत् १९०८ तक कृष्णगढ़ राज्य में बहुत समय दीवानगी का काम किया और संवत् १८६७ में जब अनपत्य महाराज श्रीमोखमसिंहजी का स्वर्गवास हुआ तब करकालिया ठिकाने से पृथिवीसिंहजी को स्वर्गवासी महाराज के उत्तराधिकारी नियत करने में बहुत यत्न करके अन्त में ये कृतकार्य हुए ।

## अचलोजी ॥

राव चन्द्रसनजी संवत १६१६ क पौष सुदी ६ का जब जोधपुर राज्य के सिंहासनारूढ हुए तब इन्होंने राज्य का काम किया और श्री दरबार क साथ लड़ाई झगड़े तथा विसे में रहकर बहुत समय तक पूर्ण सेवा की और डूंगरपुर स श्रीदरबार क साथ मारवाड़ में आते समय साजत परगने क गाँव सबराड में मुगलों क साथ लड़ाई हुई, उस में श्रीदरबार की जीत हुई और य संवत् १६३५ के श्रावण वदी ११ का मालिक की सेवा में काम आये, जिन पर श्रीदरबार न छत्री बनवाई वह अबतक मौजूद है।

## जयमल्लजी ॥

संवत् १६७१ व संवत् १६७२ में महाराज श्रीसूर सिंहजी क राज्य में गुजरात में बड़नगर क सूबे रहे, संवत् १६७२ में ही जब उक्त महाराजा साहिब का पर गने फलोदी पर अधिकार हुआ तब य वहां हाकिम बन गये सो संवत् १६७४ में जब बादशाह जहाँगीर ने बीकानेर क राजा सूरतसिंहजी को फलोदी का परगना (जो जोधपुर राज्य क अधिकार में था) दे दिया तब इन्होंने वहां पर युद्ध करके बीकानेर क राज्य की सेना को भगादी और फलोदी पर उनका अधिकार न होने दिया।

संवत् १६७८ के भाद्रपद सुदी १० को महाराज श्री गजसिंहजी ने जालोर परगने पर अपना अधिकार किया उस समय ये महाराज की सेवा में थे और उस सेवा के कारण जालोर की हुकूमत प्रथम इन्हीं को मिली।

संवत् १६८१ में जालोर शत्रुंजा सौचोर, मेड़ता और सिवाना में इन्होंने जिनमंदिर बनवाये।

इसी वर्ष जब महाराज श्रीगजसिंहजी साहिब बादशाह जहांगीर की सहायता के लिये हाजीपुर पटना की तरफ पधारे थे तब ये साथ थे और वहां पर फौजमुसाहिब रहे थे।

संवत् १६८६ से १६९० तक दीवानगी का काम किया।

संवत् १६८७ में अकालपीड़ित महाजन सेवक आदि जनों का अन्न वस्त्र से साल भरतक पोषण किया।

संवत् १६८८ में सिरोही के रावजी अखैराजजी पर १०००००) एक लाख पीरोजों (एक प्रकार की मुद्रा) की पेशकशी (दण्ड) ठहराई जिसमें ७५०००) तो रोकड़ लिये और २५०००) बाकी रक्खे।

नेणसीजी ॥

संवत् १६८६ से १७०५ तक कई वक्त दरबार के विरोधियों को दण्ड देकर स्वामी की सेवा की और जब भी

दरबार ( प्रथम जसवंतसिंहजी ) ने बादशाह शाहजहां की आज्ञा के अनुसार जैसलमेर के हकदार भाटी सबल सिंह को वहां का राज्य दिलाने के लिये बहुतसी सेना देकर इनको संवत् १७०६ के आषाढ़ बदी ३ को रवाना किया तब इन्होंने जाकर संवत् १७०७ के कार्तिक बदी ६ को पोकरण भाटियों से फतह की और फिर जैसलमेर पर चढ़ाई की तो वहां के भाटी भागगये तब यह सबल सिंह को वहां का राजा बनाकर जोधपुर लौट आये, पोकरण बादशाह के इकरार के मुताबिक जोधपुर के अधिकार में रहा।

संवत् १७१४ के ज्येष्ठ बदी १२ को देश दीवानगी का काम इनको सौंपा गया उसे १७२३ तक करते रहे। इस अरसे में समयानुसार फौजमुसाहिब का काम भी इन्होंने किया एवं श्रीदरबार की सेवा सच्चे अन्तःकरण से सब प्रकार करते रहे।

इन्होंने मारवाड़ के गांवों में मरदमशुमारी व खाना शुमारी भी की और आमदनी का हिसाब तैयार किया, तथा बहुत यत्न करके आमदनी बढ़ाई और प्रजापर बहुत लागें थीं वे छुड़वाई गई तथा बावड़ी कूए बनाकर लोगों का उपकार भी बहुत किया।

## सुन्दरसीजी ॥

महाराज जसवन्तसिंहजी के तन दीवान ( माइपन सफरी ) संवत् १७११ से १७२३ तक रहे। मालिक के साथ रहकर बहुत सेवा की।

## करमसीजी ॥

बादशाह औरंगजेब तथा महाराज जसवन्तसिंहजी के आपस में उज्जैन के पास मौजे धारनारायण में लड़ाई संवत् १७१४ के बैशाख में हुई, उसमें इन्होंने बहुत वीरता से युद्ध किया और जख्मी हुवे, इस युद्ध में भी दरबार की जय हुई।

## धैरसीजी ॥

इन्होंने रूपनगर के महाराज मानसिंहजी के समय में तन दीवानगी का काम संवत् १७४२ में किया।

## संग्रामसिंहजी ॥

मरुधराधीश महाराज श्री अजीतसिंहजी के राज्य के समय संवत् १७८० में, मारोठ, परबतसर आदि सात परगनों की हुकूमतें कीं।

## सांवतसिंहजी ॥

इन्होंने मारोठ की हुकूमत की और उसके पास ही संवत् १७८४ में सांवतपुरा नाम का एक ग्राम बसाया।

## रावजी सुरतरामजी ॥

य नागोर क महाराज बख्तसिंहजी की सेवा में फौज बख्सी का काम करत थ, संवत् १८ ८ में महाराज क साथ जोधपुर आय और यहां पर भी बख्सी का काम करत रहे।

इनको श्री दरबार न संवत् १८०८ क भादवा वदी ३ ( तृतीया ) के दिन कृपा करक गांव लूणावास और पाव खाऊ रख १०००) तीन हज़ार क प्रदान किय।

संवत् १८१० क ज्येष्ठ शुक्ला ५ ( पंचमी ) के दिन इनको दीवानगी का अधिकार मिला सा संवत् १८२१ तक इन्हीं क पास रहा और श्री दरबार न प्रसन्न होकर पन्द्रह हज़ार की जागीर इनको प्रदान की।

संवत् १८२२ में इन्होंने दक्खिणी म्यावू क साथ युद्ध किया और उस जीतकर उसकी सेना की सामग्री को लूट लिया।

संवत् १८३० क फाल्गुन सुदी ३ (तृतीया) क दिन इनको मुसाहिबी का अधिकार मिला तथा राव पदवी क साथ हाथी, पालकी का शिरोपाव मिला और चैत्र वदी सप्तमी क दिन श्रीदरबार न २१०००) की जागीर इनको प्रदान की।

## सवाईरामजी ॥

संवत् १८३१ में इनके पिता का देहान्त होने पर उनका सारा अधिकार ( मुसाहिबी तथा पट्टा ) इनको मिला, सो संवत् १८४६ तक बना रहा।

## सरदारमलजी ॥

संवत् १८४६ के बैशाख सुदी ११ (एकादशी) के दिन इनको दीवानगी हुई और संवत् १८४७ के आषाढ़ सुदी द्वितीया को रु० २०००) की रेख का गांव कारूलाप मिला।

## ज्ञानमलजी ॥

इन्होंने महाराज श्री मानसिंहजी के समय में दीवानगी का काम किया और गींगोली की लड़ाई तथा घरमें उक्त महाराज की सेवा पूर्णरीति से की थी।

## नवलमलजी ॥

इन्होंने संवत् १८६१ में सिरोही फतह की और अल्पावस्था में ही इन का देहान्त होगया।

## रामदासजी ॥

संवत् १८८६ के आषाढ़ बदी १० (दशमी) को श्रीदरबार ने परगने सामत का गांव खासरा रेख रु० ३ ) का इनको प्रदान किया।

## जीतमल्लजी ॥

इनको भी दरबार ने सोजत परगने का गाँव सौंडिया दिया।

## प्रतापमल्लजी ॥

इन्होंने संवत् १६०४ में खास हवाला तथा दीवानी फौजदारी अदालत का काम किया और संवत् १६०६ के आषाढ़ सुदी ६ नवमी के दिन परगने पाली का गाँव ऊतमण १६००) की रेख का जागीर में मिला, वह अब तक उनके पौत्र धूड़मलजी के अधिकार में है।

## फौजमलजी ॥

संवत् १८६८ में गाँव मोररा इनको मिला और इन्होंने जोधपुर तथा जैतारण की हुकूमतों का काम भी किया।

## गणराजजी ॥

इन्होंने संवत् १६१८ में सोजत की हुकूमत का काम किया और संवत् १६३२ में सायरों का काम भी किया।

## मगनमल्लजी ॥

इनको जोधपुर नरेश ने सं० १८८७ के आश्विन शुक्ल ११ के दिन परगने पाली का गाँव खौंखरा १०००) की रेख का सन्मान किया, वह अब तक उन के वंशजों के अधिकार में है।

## गजसिंहजी ॥

इन्होंने संवत् १७८० में कृष्णगढ राज्य के परगने सरवाड़ की हुकूमत की।

## अमरसिंहजी ॥

ये कृष्णगढ़ में महाराज भीमप्रतापसिंहजी के समय में सेनापति फौजबख्शी थे।

## संग्रामसिंहजी ॥

इन्हों ने उपर्युक्त महाराजा साहिब के राज्य के समय रूपनगर और अराई की हुकमतों का काम किया।

---

## घनेसिंहजी ॥

इन्होंने कृष्णगढ़ में करकत्री और रूपनगर की हुकूमत का काम किया।

## मानमसिंहजी ॥

ये पूर्वोक्त राज्य में हुकूमत सरवाड़ के कार्यकर्त्ता रहे थे।

## गुलाबसिंहजी ॥

ये भी परगने रूपनगर और सरवाड़ के हाकिम रहे।

( २४ ) देवीचन्द्रजी के भाई ॥
रामचन्द्रजी
हठीसिंहजी
सूरसिंहजी
महेशदासजी
भवानीदासजी
रामसिंहजी
प्रतापसिंहजी
केसरीसिंहजी
किशोरसिंहजी
गिरधरसिंहजी
रेवतसिंहजी
गोवर्धनदासजी
फौजसिंहजी

पृथ्वीसिंहजी हिम्मतसिंहजी हमीरसिंहजी अमरसिंहजी नवलसिंहजी श्यामसिंहजी

भीमसिंहजी रघुनाथसिंहजी दौलतसिंहजी रायसिंहजी

सोभागसिंहजी अजीतसिंहजी जसवंतसिंहजी अनूपसिंहजी माधवसिंहजी भर्तृसिंहजी मोतीसिंहजी

जैतसिंहजी लाखसिंहजी जीवणसिंहजी लक्ष्मणसिंहजी भारथसिंहजी सालमसिंहजी मालसिंहजी

मदनसिंहजी फूलसिंहजी ओंकारसिंहजी सरदारसिंहजी शार्दूलसिंहजी

बुधसिंहजी रणजीतसिंहजी चाँदसिंहजी अमरसिंहजी इन्द्रसिंहजी सुगनसिंहजी

सरदारसिंहजी दलीसिंहजी

सज्जनसिंहजी बहादुरसिंहजी

## रामचन्द्रजी ॥

इन्होंने सं० १७८१ के बाद से दीवानगी का काम कृष्णगढ़ाधीश महाराज श्री बहादुरसिंहजी के समय में किया।

## हठीसिंहजी ॥

उपयुक्त महाराजा साहिब ने सं १८३१ में इनको दीवानगी का अधिकार सौंपा और इसके साथ ही ताज़ीम तथा हाथी सिरोपाव प्रदान किया, जिसमें तलवार और कटार देने की विशेष कृपा की।

## सूर्यसिंहजी ॥

इन्होंने पूर्वोक्त समय में जागीरबक्षी का काम किया।

## बाघसिंहजी ॥

ये उसी समय में फौजबक्षी थे।

## जोगीदासजी ॥

महाराज श्री विरदसिंहजी तथा प्रतापसिंहजी के राज्य में इन्होंने दीवानगी का काम किया। कृष्णगढ़ाधीश महाराज श्री प्रतापसिंहजी की मरुधराधीश श्री विजयसिंहजी साहिब के साथ मित्रता कराने में इन्होंने तथा इनके भाई हमीरसिंहजी ने बहुत श्रम किया और अन्त

में कृतकार्य हुए, इस सभा से प्रसन्न होकर श्री योधपुराधीश ने संवत् १८४६ के द्वितीय वैशाख वदी १० ( दशमी ) के दिन इनको ताजीम के साथ मोती, कड़ा और सुवर्ण यज्ञोपवीत प्रदान किया, तदनन्तर कृष्णगढ़ेश्वर श्री प्रतापसिंहजी ने भी इनको ताजीम देकर सम्मानित किया।

## शिवदासजी ॥

इन्होंने सं० १८८७ में महाराज कल्याणसिंहजी के समय दीवानगी का काम किया।

## हिन्दुसिंहजी ॥

महाराज बहादुरसिंहजी के राज्य में इन्होंने माईदासजी के साथ में दीवानगी का काम किया।

## हमीरसिंहजी ॥

ये मरुधराधीश श्री विजयसिंहजी के पूर्ण कृपापात्र थे और कृष्णगढ़ाधिपति श्री प्रतापसिंहजी ने इनको ताजीम जीकारा, दरबार में सिर बैठक, हाथी सिरोपाव और गाँव प्रदान किया था।

## प्रतापसिंहजी ॥

ये महाराज प्रतापसिंहजी के बड़े कृपापात्र थे और इन्होंने राज्य के बहुत काम किये।

## धीरजसिंहजी ॥

इन्होंने पूर्वोक्त महाराज के समय में सरवाड़ परगने की हुकूमत का काम किया। अब इनके वंश में फौज सिंहजी परगन अराई क हाकिम हैं।

## महेशदासजी ॥

इन्होंन महाराज पृथ्वीसिंहजी क समय में बड़े २ काम किये हैं। इनके सुयोग्य पुत्र छगनसिंहजी ने भी महाराज शार्दूलसिंहजी क समय में बहुत से काम किये हैं और इस समय कृष्णगढ़ महाराज श्री मदनसिंहजी की भगिनी तथा अजवर न रेशकी महारानीजी साहिबाके पूर्ण कृपा पात्र मुख्य कामदार हैं।

## गंगादासजी ॥

ये महाराज श्री मोखमसिंहजी क समय में राज्य के मुख्य कोषाध्यक्ष थ, इनके पुत्र गोविन्दसिंहजी इस समय रूपनगर की हुकूमत का काम करते हैं।

## पृथ्वीसिंहजी ॥

महाराज श्री बहादुरसिंहजी क राज्य में इन्होंने हुकूमतों का काम किया है और इनके वंशजों न कृष्णगढ़ राज्य में कई काम किय हैं। हाल में मदनसिंहजी परगन कृष्णगढ़ के हाकिम हैं।

## उम्मेदसिंहजी ॥

ये महाराज श्री प्रतापसिंहजी के समय में सेनाध्यक्ष ( फौजबख्शी ) थे।

## रघुनाथसिंहजी ॥

इन्होंने महाराज श्री कल्याणसिंहजी के राज्य में सेनापति का काम किया।

## माधवसिंहजी ॥

ये मेदपाटाधीश्वर ( मेवाड़ नरेश ) श्री शम्भुसिंहजी तथा महारानासाहिब श्री सज्जनसिंहजी के पूर्ण कृपापात्र रहे और उक्त महारानासाहिब ने प्रसन्न होकर इनको सोना और जागीर दी। यहाँपर इन्होंने काम मुसाहिबीका काम किया। इनका देहान्त होनेपर इनके सुपुत्र पल्लचन्द सिंहजी को अपने पिता का सर्वाधिकार मिला उन्होंने भी श्री महारानासाहिब की बहुत सेवा की, अब इस समय में उनके पुत्र लक्ष्मणसिंहजी महारानाजी श्री फतह सिंहजी साहिब की सेवा कररहे हैं।
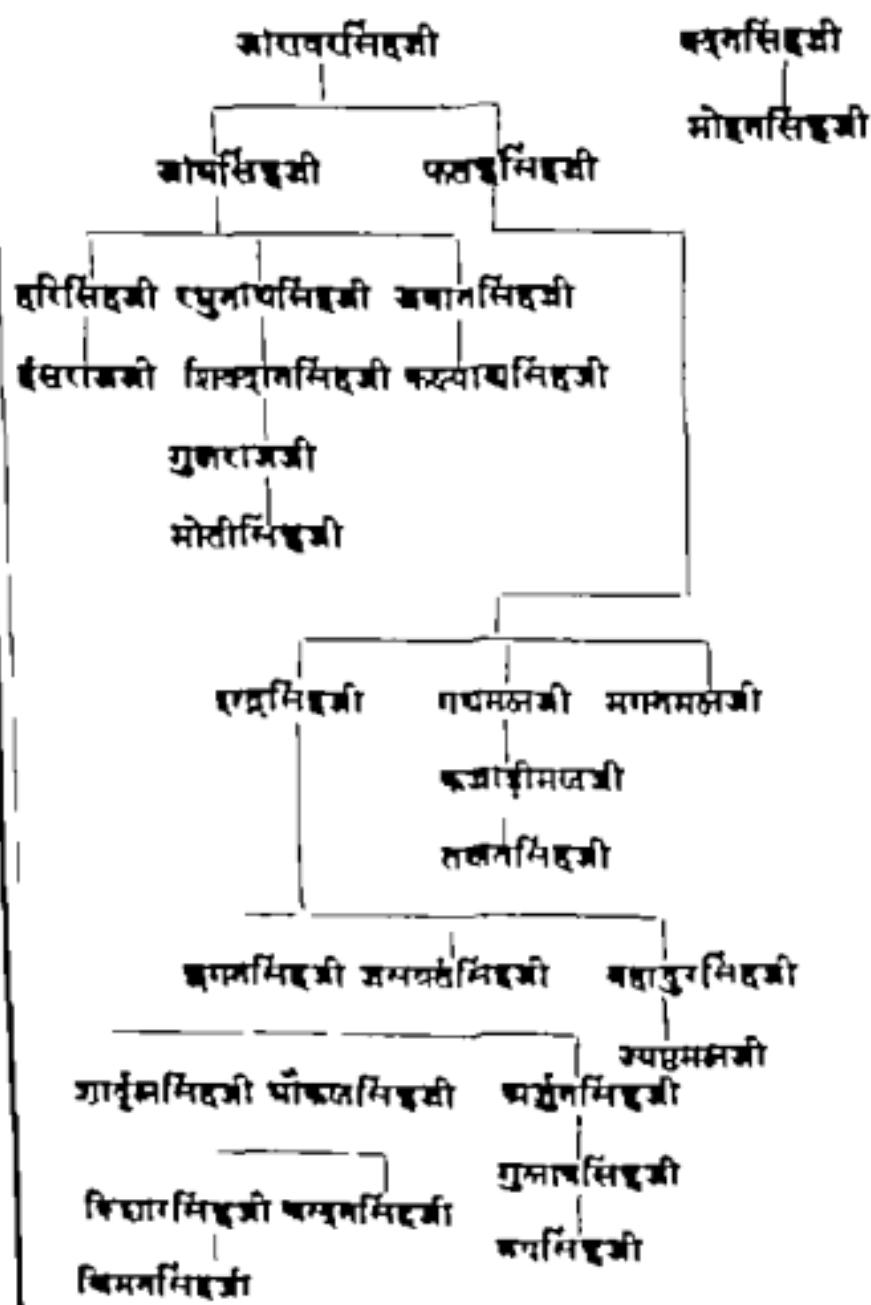
## जोरावरसिंहजी ॥

इन्होंने राज्य कृष्णगढ़ के ठिकाने फतहगढ़ का काम किया। इनके पुत्र नाथसिंहजी से लगाकर गुलाबजी तक बराबर उक्त ठिकाने का काम करते रहे हैं।

और इन्होंने पूर्वोक्त ठिकानेकी ओर से सेना लेकर मरुधराधीश श्री विजयसिंहजी साहिब की सेवा की थी, उस वृत्तान्त को सुनकर महाराज श्री भीमसिंहजीने प्रसन्न होकर जो परवाना ( सार्टिफिकेट ) प्रदान किया उसकी नकल निम्नलिखित है:—

श्रीपरमेश्वरजी सत्य छै

मोहर

( श्री दरबारसाहिब के हस्ताक्षर )

हुकम छै

॥स्वारूप श्री रामराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री भीमसिंहजी वचनात् माहएात जोरावरसिंह दिस सुमसाद वाचजो तथा फतगढ़ में आछा साथ लेन श्री

बड़ा महाराजाजीरी हजूर में आशीर्वाद बंदगी कीवी मकस पाण्ण पिरों जास्त परिया पाँच आम्मी घाटा पासण आया तिणरी हकीकत मकारा गगागम मालुम कीवी सा म सुख हुआ निवासस हुसी सम्वत् १८५   कार्ती सद ? मुकाम पाय तख्तनगर जोधपुर।

## हरिसिंहजी ॥

जब फतहगढ़ पर कृष्णगढ़ की सेनाने आक्रमण करके युद्ध किया तब ये स्वामीका सभामें काम आये।

## छगनमलजी ॥

ये फतहगढ़से दयाविय प्रतापगढ़ गये तब से उनके वंशज वहां के निवासी हुये।

---

महता करणसिंहजी जिस समय में मुख्य दीवान थे उस समय उनके छोटे भाई—

भगवत्सिंहजी ॥

सरवाड़ परगने के हाकिम थे ।

जगन्नाथसिंहजी ॥

रूपनगर परगने के हाकिम थे । और—

महताबसिंहजी ॥

परगने भराई की हुकूमत का काम करते रहे ।

रायबहादुर महता विजयसिंहजी साहिब
दीवान, मारवाड़ स्टे.

ॐ

# रायबहादुर महता विजयसिंहजी

का

# जीवनवृत्तान्त

प्रज्ञया वा प्रसारितया वा बलेन धनेन वा ।
धुरं वहति गोत्रस्य जननी तेन पुत्रिणी ॥

अर्थ ॥

जो ( पुत्र ) प्रत्येक कार्य में प्रवृत्त होनेवाली तीक्ष्ण बुद्धि, बलसे या धनसे अपने वंशके कार्यका भार उठाता है उसी पुत्रसे माता पुत्रवती कहलाती है ।

प्रिय पाठकगण ! कृष्णगढ़ के दीवान महता करण सिंहजी के द्वितीय पुत्र महता विजयसिंहजी का जन्म कृष्णगढ़ में विक्रम संवत् १८७२ के पौषकृष्णा ५ (पञ्चमी) चन्द्रवार के दिन ७ घटिका और १३ पल दिन चढ़नेपर मकर लग्न के शुभ समय में हुआ ।

जन्मलग्नचक्रमिदम् ॥
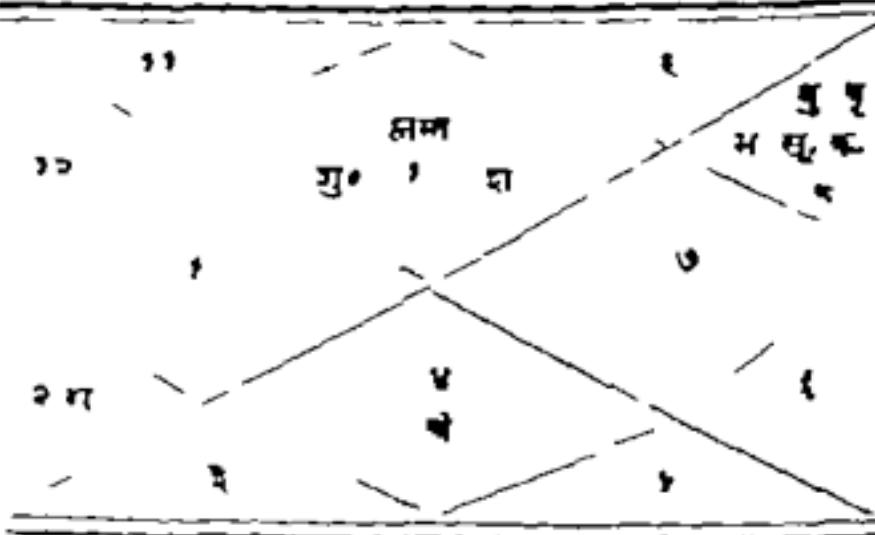
## ग्रहोंका फल ॥

इस जन्मकुण्डली में ग्रह बहुत ही उत्तम स्थानों में स्थित हैं तथा ग्रहों का परस्पर सम्बन्ध भी प्रशंसनीय है यदि इन ग्रहों का सारा फल लिखा जाय तो केवल इसी विषय का एक बड़ा पुस्तक बनजाय, इस कारण विस्तारभयसे अधिक न लिखकर संक्षेप से मुख्य २ बातोंका वर्णन पाठकों के अवलोकनार्थ किया जाता है।

सूर्य एकादश स्थान में स्थित है उसका फल—

> रवौ लाभगे [illegible]
> [illegible] ।
> प्रतापानले [illegible]
> [illegible] ॥

अर्थ ॥

जिसके जन्मलग्न में सूर्य लाभस्थान में स्थित हो तो वह ( पुरुष ) राजकी मुद्रा ( मोहर ) का अधिकार पाकर अर्थात् मुख्य मन्त्री ( दीवान ) का पद प्राप्त करके राजद्वार से बहुत धन उपार्जन करे और बड़ा प्रतापशाली होवे, जिससे शत्रु लोग उसकी समृद्धिको देखकर जलते रहें तथा उसके पास अनेक प्रकार की धन सम्पत्ति होवे और उसको कभी कुछ सन्तति के विषय में दुःख भी होवे।

---

चन्द्र सप्तमस्थान में है उसका फल ॥

लग्नं विहाय केन्द्रे
सकलकलापूरितो निशानाथः।
भार्गवगुरुसंदृष्टे,
जातो राजा भवधिपतम् ॥

अर्थ ॥

यदि सब कलाओं से पूर्ण चन्द्रमा लग्न को छोड़कर किसी केन्द्र अर्थात् ४।७।१० स्थान में स्थित हो और शुक्र तथा गुरुसे देखागया हो तो उस समय में जन्मा हुआ ( मनुष्य ) निश्चय करके राजा हो।

---

मङ्गल लाभ ११ स्थान में हो तो क्या करता है ॥

त्रिषडेकादश राहुस्त्रिषडेकादश इनिः ।
त्रिषडेकादशे भौमः सर्वारिष्टं विनाशयेत् ॥

अर्थ ॥

तीसरे, छठ और ग्यारहवें स्थान में राहु, सूर्य्य तथा मङ्गल इनमें से कोई ग्रह यदि स्थित हो तो सब प्रकार की पीड़ाओं का नाश करे।

---

गुरु ( बृहस्पति ) लाभस्थान में है उसका फल ॥

यज्ञक्रियः साधुजनानुयातो
राजाश्रितोऽत्यन्तकृपा नरः स्यात् ।
द्रव्यान्वितो हेमयुतश्च युक्तो
लाभे गुरौ वागिरीशश्च यत् ॥

अर्थ ॥

यदि गुरु लाभस्थान में हो और वह पद्धंग देखता हो तो मनुष्य यज्ञ करने वाला, सत्पुरुषों से सेवन किया गया, राजाका आश्रित, बहुत बड़ा दयालु तथा परोप कारी होवे और बहुत सुवर्ण ( सोना ) तथा अनेक प्रकार की उत्तमोत्तम वस्तु से युक्त हो।

तथा—

एकं धनं सुरराजपुरोधा
यन्दुगाऽऽय नयपश्रमतो वा ।

सामगा भवति यत्र विलग्ने
तत्र शेषखचरैरबलैः किम् ॥

अर्थ ॥

जिस कुण्डली में केवल एक देवताओं के राजा (इन्द्र) का पुरोहित बृहस्पति ही यदि केन्द्र १।४।७।१० स्थान में तथा नवम (९) पञ्चम (५) अथवा लाभस्थान में गया हो तो उसमें दूसरे ग्रह निर्बल होने से क्या? अर्थात् अन्य ग्रह बलहीन होने से भी कोई हानि नहीं होती।

---

शुक्र लग्न में है उसका फल।—

समीचीनमङ्गं समीचीनसङ्गः,
समीचीनवलक्ष्मासाभोगयुक्तः।
समीचीनकर्म्मा समीचीनशर्म्मा
समीचीन शुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥

अर्थ ॥

जब कि शुक्र बलवान् होकर लग्न में स्थित हो तो मनुष्य का शरीर उत्तम होवे और अच्छे पुरुषों का सङ्ग हो तथा वह उत्तम पत्नी व सांसारिक भोगों से युक्त होवे और उसके काम अच्छे हों तथा सब प्रकार के सुख हों।

और भी—

एकः शुक्रो जन्मसमये लाभसंस्थश्च चन्द्र
पाता वा सम्मराशौ यदि सहजगतः प्राप्यते वै त्रिकाय।

विद्याविज्ञानयुक्तो भवति नरपतिर्विश्वविख्यातकीर्ति
र्दानीमानी च शूरस्तुरगगजयुतः सन्नतो सम्यमानः ॥

अर्थ ॥

यदि जन्म के समय एक शुक्र ही लाभस्थान में या केन्द्र १ । ४ । ७ । १० में गया हो अथवा जन्मराशि में, तृतीयस्थान में या त्रिकोण स्थान में पाया जाय तो मनुष्य बड़ा दानी, मानवाला, शूरवीर उत्तम हाथी और घोड़ों के समूह से सेवा किया जाता, विद्या तथा विज्ञान ( विशेष ज्ञान ) से युक्त, संसार में प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजा होता है ।

---

शनैश्चर का फल:—

चन्द्रात् सप्तमे स्थाने यदा स्याद्रविनन्दनः ।
महाधनी च दाता च स्त्रीणां बहुप्रियङ्करः ॥

अर्थ ॥

जब सूर्य का पुत्र ( शनैश्चर ) चन्द्र से सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा धनवान्, दाता और स्त्रियों का बहुत प्रिय करनेवाला होता है ॥

---

सब ग्रह केन्द्र १।४।७।१० पणफर २।५।८।११ स्थानों में ही स्थित हैं उनका फल—

केन्द्राष्टके पणफरे च खगाः समस्ताः ।
स्थादिक्कवाल इति राज्यसुखाप्तिहेतुः ॥

अर्थ ॥

जो सब ग्रह केवल केन्द्र और पणफर स्थानों में ही बैठ हों तो इक्कबाल योग होता है । यह योग राज्यसुख प्राप्तिका हेतु ( कारण ) है ।

इक्कबाल योग का फलः—

योगेऽस्मिन् भवति प्रतापी,
राजा भवेद्धार्मिक शूरवृत्तिः ।
बहुधनभागी सुतदारयोश्च
रत्नाश्वभाग् क्षपितारिवर्गः ॥

अर्थ ॥

इकबाल योग होने पर पुरुष प्रतापवान्, धर्मात्मा, बड़ा विजयी शूरवीर राजा होता है । बहुत धनका भोग करने वाला, स्त्री पुत्रों से सुखी, बहुत उत्तम रत्न और घोड़ों का मालिक होता है तथा उसके सब शत्रु नष्ट होजाते हैं ।

---

केन्द्र और त्रिकोणके स्वामियों का परस्पर में सम्बन्ध हो उसका फलः—

त्रिकोणाधिपयोर्मध्ये सम्बन्धो येन केनचित् ।
केन्द्रनाथस्य बलिना भवेद्यदि सुयोगकृत् ॥

विद्याविज्ञानयुक्तो भवति नरपतिर्विश्वविख्यातकीर्ति
र्दानीमानी च शूरस्तुरगगजयुत सन्नतो सेव्यमानः ॥

अर्थ ॥

यदि जन्म के समय एक शुक्र ही लाभस्थान में या केन्द्र १।४।७।१० में गया हो अथवा जन्मराशि में, तृतीयस्थान में या त्रिकोण स्थान में पाया जाय तो मनुष्य बड़ा दानी, मानवाला, शूरवीर उत्तम हाथी और घोड़ों के समूह से सेवा किया जाता, विद्या तथा विज्ञान ( विशेष ज्ञान ) से युक्त, संसार में प्रसिद्ध कीर्तिमान राजा होता है।

---

शनैश्चर का फल—

चन्द्राच्च सप्तमे स्थाने यदा स्याद्रविनन्दनः।
महाधर्मी च दाता च स्त्रीणां बहुप्रियङ्करः ॥

अर्थ ॥

जब सूर्य का पुत्र ( शनैश्चर ) चन्द्र से सप्तम स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा धर्मवान्, दाता और स्त्रियों का बहुत प्रिय करनेवाला होता है ॥

---

अर्थ ॥

बालक के शरीर पर सब शुभ लक्षण देखने से लोगों को यह ज्ञात होजाता है कि यह ( बालक ) किसी उत्तम वंशका एक होनहार सुपुत्र है, जैसे कि होनहार आम्र अशोक, बट, पिप्पल आदि महावृक्षों के पादे ही चिकने पत्तवाले होते हैं।

---

जब ये पाँच वर्ष के हुए तब शास्त्रोक्त विधि से अक्षरारंभ संस्कार कराकर इनको घरपर ही पंडितजी से साधारण अक्षर पढ़ना व लिखना सिखलाया गया, फिर छः साल की अवस्था में इनको पाठशाला में पढ़ने के लिये भेजा सो वहाँ पर इन्होंने अपनी तीक्ष्ण बुद्धि तथा योग्य आचरण से गुरुजी को प्रसन्न रखकर उस जमानकी पाठशालाओं में जो विद्या ( लेखन वाचन, गणितविद्या, कलाप व्याकरणकी पञ्चसन्धि तथा चाणक्यनीति आदि ) पढ़ाई जाती थी उसको तीन (३) वर्ष तक अभ्यास करके उक्त विषयों में पूर्णरीति से ज्ञान सम्पादन करलिया।

उस समय में राजपूताने के प्रत्येक विभाग में प्रति दिन इधर उधर लड़ाइयाँ होती रहतीं थीं, हरएक पुरुष को अपने प्राण व धनकी रक्षा करने में बुद्धिमानी के साथ श्रम करने पर भी सन्देह बना रहता था, बहुतसे

अर्थ ॥

यदि बलवान् चन्द्रनाथ का त्रिकोण ( नवम, पञ्चम स्थानों ) के पतियों में से जिस किसी के साथ सम्बन्ध हो तो वह अच्छा योग करता है ।

---

पुत्र होने के सुसमाचार सुनते ही महता करणसिंहजी ने अपनी उदारताका परिचय दिखाकर उस समय जो उनके समीप आया उसको सुवर्ण वस्त्रादि से सन्तुष्ट किया ।

नामकरण संस्कार के बाद शुक्लपक्ष के चन्द्रमा की तरह प्रतिदिन बढ़ता हुआ इनके सुडौल शरीर के नेत्र, नासिका आदि सुन्दर अवयव दर्शकों के मनको हरते थे तथा गौरवर्ण के साथ इनके चेहरे पर एक विचित्र चमक दमक झलकती थी ।

जब दो वर्ष की अवस्था हुई तो ये नेत्र चक्षु विकार तथा हस्तसङ्केतों के साथ अपनी अस्पष्ट वाणी और अनाखी बातसे सब सम्बन्धियों को बहुत ही प्यारे मालूम होते थे, उस समय ही इनके उत्तम लक्षणों को देखकर सबों के चित्तमें यह निश्चय हुआ कि यह बालक एक होनहार पुरुषरत्न है क्योंकि—

> कुलसपूत जान्यो परत लखि सुभ लच्छन गात ।
> होनहार बिरवान के, होत चीकने पात ॥

अर्थ ॥

किसी न एक पंडित से पूछा कि मीठा क्या है ? तो पंडित ने उत्तर दिया कि पुत्र का वचन । फिर पूछा कि अधिक मीठा क्या है ? तिसपर भी यही उत्तर मिला कि यही पुत्र का वचन । और भी पूछा कि मीठे स भी बहुत मीठा अर्थात सब स मीठा क्या है ? तब पण्डित न उत्तर दिया कि विद्या स भरा हुआ यही पुत्र का वचन है । अर्थात् संसार में इसस बढ़कर कोई पदार्थ नहीं है ।

महाराजी इस उम्र में भी जनाने में माता क पास तो कवल खानपानादि आवश्यकता क समय आया करत थे, अधिकतर इनका स्वभाव अपन पिताजी के पास अथवा पुरुषों में बैठन का था, जब य बड़ महाराजी क साथ दीवानखाने में अथवा उनक इष्ट मित्रों क मकान पर जात तो वहाँ राजनीति की बातों को बहुत ध्यान दकर सुना करत ।

इन्हीं दिनों में पिताजी न इनको घोड़ की सवारी, शस्त्रविद्या, कसरत और तैरना आदि सिखलाना आरम्भ किया, उन कलाओं में अभ्यास करत हुए कवल एक ही वर्ष क भीतर अच्छ निपुण होगय ।

उसी समय में महाराज करणसिंहजी न विचार किया कि अब यह कुमार सब प्रकार स योग्य है तथा इनकी

काम अव्यवस्थित थे, क्योंकि तबतक अंगरेजोंका राज्य पूरे तौर से नहीं जमा था, इस कारण से लोग यथष्ट अपने २ लाभ के लिये जहाँ तहाँ धावदौड़ मारखोस किया करते थे।

इस प्रकार का समय होने से हर जगह पर इस विषय की नितनई बातें हुआ करती थीं। जब कहीं इनके सामने ऐसी मारधाड़ों की चर्चा का प्रसङ्ग छिड़ता था तब ये इन बातों को ध्यान देकर बड़ी चाहसे सुना करते थे और बीच २ में प्रश्न करके पूर्ण रीति से उस विषय को समझ कर चित्त में धारण करते थे।

कहानी किस्से सुनने का इनको बहुत शौक था, श्रीरामचन्द्रजी, श्रीकृष्ण और कौरव पाण्डवों का इतिहास सुनकर तो ये बहुत ही प्रसन्न होते थे और अब २ अपने माता पिता के सामने पुरातन राजाओं की कहानियाँ ये स्वयं कहते थे, उस समय इनके स्पष्ट व मधुर वाक्योच्चारण और वीररस के स्थल में भौंहें चढ़ाकर शूरता दिखाना तथा चित्त की गम्भीरता ये जननी और जनक के चित्त को अत्यन्त आनन्दित करते थे। एक कवि ने कहा है कि—

किं मधुरं, सुतवचनं,
मधुरतरं किं, तदेव सुतवचनम्।
मधुरान्मधुरतमं किं,
श्रुतिपरिपक्वं तदेव सुतवचनम्॥

कहीं सन्देह होता तो इतिहासवेत्ताओं को पूछकर निर्णय कर लेते ।

ये अपने अवकाश के समय का थोड़ा भी व्यर्थ नहीं बिताते, समय को सब वस्तुओं की अपेक्षा बहुमूल्य मानकर प्रतिक्षण कुछ न कुछ काम किया करते थे । एक कविका पद्य है कि—

समय गया फिर नहिं मिलत बहुत अशर्फिन माल ।
हय गय रत्न दुकूल पट, रथ बहु दिय धमाल ॥

अर्थ ॥

समय अमूल्य है, इसमें से जो बीत गया वह बहुमूल्य बहुत से घोड़, हाथी, रत्न, रेशमीन वस्त्र और रथ देने पर भी पीछा नहीं आता ।

---

एतदनुसार इनके प्रतिदिन के सब काम ( प्रातःकाल उठने से लेकर रात्रि में शयन पर्यन्त ) यथासमय हुआ करते थे ।

ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही इनको व्यावहारिक कलाओं का व तात्कालिक विषयों का ज्ञान इतना होगया था कि राजनीतिज्ञ अच्छे अनुभववाला पुरुष भी इस बार में इनकी बुद्धिकी प्रशंसा करते थे ।

इस वय में भी इनको ईश्वरभक्ति और धर्म में दृढ़ विश्वास होने के कारण देवपूजा, स्तोत्रपाठ आदि नित्य कृत्यों में बड़ा ही अनुराग था ।

अवस्था भी ठीक है, इस कारण यज्ञोपवीत ( उपनयन ) संस्कार होना चाहिये, क्योंकि महाराज मनुजी ने लिखा है कि—

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् ।
गर्भादेकादशे राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः ॥

अर्थ ॥

ब्राह्मण का उपनयन संस्कार गर्भ से आठवें वर्ष में करना चाहिये, गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय का और गर्भ से बारहवें वर्ष में वैश्य का उपनयन संस्कार करना योग्य है ।

---

यह विचार शुभ लग्न दिखाकर वेदोक्त विधि से इनका यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया ।

फिर इनको गणितविद्या में निपुण तथा उत्साही जानकर पिताजी ने गृहस्थव्यवस्था का काम भी इन्हीं को सौंप रक्खा था, जिससे ये आयव्यय लिखना इत्यादि गृहकार्यनिरीक्षण में अत्यन्त कुशल होगये थे ।

हरएक बात का शोध पूर्णरीति से करते थे तथा जो वस्तु उनके सामने आती उसे पूरे तौर से चित्त लगाकर देखते और उसके गुणागुण जानने का यत्न करते ।

अपने देश का और देश के पुरातन तथा आधुनिक राजाओं का इतिहास ये अच्छी तरह से जानते थे और

शरीर और वय ( उम्र ), इन सात गुणोंका पूरा विचार करके कन्या देवें, शेष गुणागुणों की ओर देखने की विशेष आवश्यकता नहीं है ।

---

इस प्रकार विचार करते करते उनका लक्ष्य इधर पहुँचने पर यह ज्ञात हुआ कि कृष्णगढ़ के दीवान महता करणसिंहजीके द्वितीय पुत्र विजयसिंहजी सब भाँति से बहुत योग्य हैं सो बाई का सम्बन्ध वहींपर करना उचित है, यह विचार कर श्री महताजी से पत्रद्वारा बात चीत करके यह सम्बन्ध दृढ़ करलिया ।

विक्रम संवत् १८८४ के माघ शुक्ल ५ (पञ्चमी) के दिन जोधपुर में बड़े ठाठ बाट से रात्रिके समय वेदध्वनि तथा माङ्गलिक गान होरहा था उस समय शुभ मुहूर्त्तमें इनका पाणिग्रहण ( विवाह ) संस्कार बहुत आनन्द के साथ हुआ ।

महता विजयसिंहजी की बहिन का विवाह भी जोधपुरमें नाथजी महाराज श्री भीमनाथजी के कार्य्याध्यक्ष ( कामदार ) मूथा हरखचन्द्रजी के साथ पहिले ही हो चुका था ।

इन दो सम्बन्धों के कारण महताजीका आना जोधपुर में विशेष करके होता था इस कारण से यहाँपर इनके मित्र बहुत से होगये थे ।

इनकी स्मरणशक्ति इतनी तेज़ तथा आश्चर्यजनक थी कि ये जिस पुस्तक, वस्तु तथा व्यक्ति विशेष को एक वक्त देखलेते थे फिर उसे कभी नहीं भूलते।

अनेक-गुणगण विशिष्ट होनेपर भी इनकी महरम तो स्मरणशक्ति व निरीक्षणशक्ति की विचित्रता से प्रसिद्ध थी और स्वामिभक्ति तथा लोकोपकार का अङ्कुर भी इसी समय से इनके चित्त में जमा हुआ था।

इन्हीं दिनों में जोधपुर में श्रीमरजाद सिंघवी गुलराजजी की पुत्री तथा कामदारजी सिंघवी फौजराजजी की बहिन अतीव सुलक्षणा थी, वह जब विवाह के योग्य हुई तब फौजराजजी ने विचार किया कि अब इसका विवाह शीघ्र होना चाहिये परन्तु अब तक कोई इसके योग्य वर नहीं मिला और लड़की का सम्बन्ध बहुत सोच विचार करके करना चाहिये क्योंकि—

कुलं च शीलञ्च सनाथता च
विद्या च वित्तञ्च वपुर्वयश्च।
एतान् गुणान् सप्त विचिन्त्य देया
कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥

अर्थ ॥

बुद्धिमानों को चाहिये कि जब वे अपनी कन्याका सम्बन्ध किसी के साथ करने की इच्छा करें तो कुल (उत्तमवंश), स्वभाव, सहायता, विद्या वीर्य (पराक्रम),

होकर जैतारण परगने का गाँव आसरलाई ( जिस की रेख २८००) रु० की है ) इनका पारितोषिक दिया ( इनायत फरमाया )।

उसके अमलकी चिट्ठी की नकल यह है:—

॥ श्री ॥

माहर

सिंघवी श्री गंभीरमलजी लिखावतं परगने जैतारणरा गाँव आसरलाईरा चौधरिया लाकां दिसे तथा गाँव महता विजयसिंघ फरखसिंघ धनभियोतर पट्ट हुओ है सवत् १८८६ री साख सौंवणुं थीं अमल दजा गाँव में बिना हुकम सौंसण हाली दण न पाव, दाँण जमाबंदी बगैर धाम हरबाररा है, रेख २८००) ' सागीरात राठाड भारत सिंघ सगरामसिंघात ग्वाँप ऊग्रावतरी संवत् ८८८ रा सावण वदि २ दुतियक ।

( नकल लीवी श्रीहजूरर दफ्तर )

---

विक्रमाब्द १८६५ क कार्तिक कृष्ण १४ ( चतुरदशी ) बुधवार का घटी ११ पल ४६ दिन चढ़न पर धन लग्न

बादमें संवत् १८८७ में ये किसी कार्यवशात् जोधपुर आये थे उस समय सयोग से श्री भीमनाथजी महाराज से इनकी भेट हुई नाथजी महाराजने इनको बहुत विचक्षण व कार्यकुशल जानकर योधपुराधीश महाराजाजी श्री १०८ श्री मानसिंहजी साहिब के पास इनकी बहुत प्रशंसा की, जिससे प्रसन्न होकर गुणग्राही उक्त महाराजा साहिब ने विजयसिंहजी को बुलवाकर अपनी सेवा में रखलिया, तबसे इनका निवास जोधपुर में हुआ।

संवत् १८८८ में जब बगड़ी ठाकुर जैतसिंहजी व शिवनाथसिंहजी श्री दरबार साहिबों से द्रोह कर बागी हुए, उन्होंने सं० १८८९ में शहर जैतारण को लूट लिया था, तब श्रीदरबार साहिब ने सिंघवी कुशलरामजी को फौज देकर उक्त बागियोंको सजा देनेके लिये भेजा उस समय महताजी को भी उनके साथ जाने की आज्ञा दी, सिंघवीजी ने जाकर कैलवाद मुकाम किया, यह खबर सुनते ही बागी मेवाड़ में भाग गये, तब उन्होंने बागियों का पीछा किया सो मेवाड़ के गाँव चीबड़ में उनका जापरा वहां पर आषाढ़ वदि १ (प्रतिपदा) की रात्रि में उनसे लड़ाई हुई, उसमें बागियों के बहुतसे मनुष्य मारे गये और श्रीदरबार की सेना का जय हुआ। इस लड़ाई में महताजी ने भी अपनी वीरता का प्रथम ही परिचय दिखाया था। सेना के जोधपुर आने पर श्रीदरबार साहिब ने युद्ध का सब वृत्तान्त सुन महताजी पर प्रसन्न

श्रीमान् महाराजाधिराज विद्वद्वर श्री श्री १०८ श्री मानसिंहजी साहिब शिवभक्त तथा पूर्ण ज्ञानी थे, उन्होंने अपने स्वर्गवास होने से करीब दो महीने पहिले ही पोलीटिकल एजन्ट मेजर जान् लॉडलाके के सामने अपनी इच्छा प्रकट करदी थी कि हमारे पीछे इस राज्य के उत्तराधिकारी अहमदनगर के राजा करणसिंहजी के पुत्र तख्तसिंहजी होने चाहियें।

पश्चात् उक्त महाराजा साहिब ने विक्रमाब्द १९०० के भाद्रपद शुक्ला ११(एकादशी) के दिन इस असार संसार को छोड़कर वैकुण्ठ की ओर प्रयाण किया। बाद में श्रीवैकुण्ठवासी महाराजा साहिब की आज्ञानुसार उनकी विधवा राणीजी साहिबान व सरदार और मुत्सद्दियों की भी यही इच्छा हुई तब कतिपय सरदार तथा मुत्सद्दियों के साथ महता विजयसिंहजी भी पोलीटिकल एजन्ट के सामने सबों की इच्छा को प्रकट करके कृतकृत्य हुए।

---

मान्यवर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तख्तसिंहजी साहिब बहादुर जी सी एस् आइ ने संवत् हाल सं० १९०० के मार्गशीर्ष वदि १३ (त्रयोदशी) के दिन जोधपुर की हुकूमत खाली होने के कारण उसके बदले नागौर की हुकूमतका अधिकार इन्हें सौंपा, परन्तु श्रीदरबार साहिबकी इच्छा उक्त महताजीको अपनी सभामें यहीपर रखने की थी इसलिये हुकूमत का काम

में महताजी श्री बिजयसिंहजी के पुत्र सरदारसिंहजी का जन्म हुआ, इनकी जन्मकुण्डली निम्नलिखित है:-

जननलग्नमिदम् ॥

१०
८ रा०
११
९
सू ७
१२ श
बु चं गु
शु ६ क
१
३
५
२
मं० ४

इस महोत्सव पर इन्होंने अपने इष्ट मित्रों का मान पानादि से तथा याचकों का दान मान से सन्तुष्ट किया।

इसी वर्ष में श्रीदरबार साहिबों ने कृपा करके बीलाड़े की हुकूमत दी परन्तु विवेकनिधि श्रीमहाराजा साहिब ने "यह काम इनकी योग्यता से न्यून है" ऐसा जान कर इनके शिशु सरदारसिंहजी के नाम से आज्ञा दी।

महताजी ने स्वामी की आज्ञानुसार उस हुकूमत का काम करने के लिए अपने विश्वासपात्र सिंघवी रूपमल को बीलाड़े भेज दिया।

करने की आज्ञा दी और स्वयं अनेक शस्त्रों से सज्जित होकर संग्रामभूमि में शत्रुओं को ललकारा और युद्ध करना आरंभ किया। इनके प्रतियोधा भी वीर थे, व इनके सामने बराबर लड़ने लगे। दोनों ओर के योद्धाओं ने अपनी २ वीरता दिखाकर खूबही युद्ध किया। इस प्रकार बराबर बीस (२०) दिन तक लगातार युद्ध होता रहा, जिसमें दो आक्रमण (हमले) तो बड़े ही भयङ्कर हुये। इस सङ्ग्राम में महताजी तथा राजकीय सेनाके वीरों ने बहुत जोशके साथ भयङ्कर युद्ध करके अपनी पूर्ण शूरता दिखाई, अन्त में शत्रुओं को मार भगाया और युद्ध में जय पाकर धनकाली की गद्दीपर अपना अधिकार कर लिया। फिर महताजी यहाँ की रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करके सेनाको ले जोधपुर की ओर लौटे।

इस युद्ध में दोनों ओर के बहुत लोग मरे थे, महताजी के भी शरीर के पास ही होकर गोलियां निकलीं थीं, जिनके चिन्ह इनके कपड़ों में मिले, परन्तु ईश्वरकृपा से इनके अङ्ग में न लगीं।

यह बात सत्य है कि—

> वनेऽरण्ये शत्रुजलाग्निमध्ये
> महार्णवे पर्वतमस्तके वा।
> सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
> रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि॥

करने के लिये इन्हीं कृपापात्र साह जवाहिरमल्लको नागौर भजन की आज्ञा दी।

संवत् १६०२ के आश्विन मासमें परगने डीडवाणा का गाँव कणवाई के कई डाकुओं ने जब इधर उधर लूट मार करना शुरू किया तब श्रीदरबार साहिब ने इस उपद्रव को शान्त करने के लिये महतामीको फौज देकर वहां भेजा, इन्होंने वहाँ जाकर उन डाकुओं को अपनी बुद्धिमानी तथा वीरतासे पकड़कर निबद्ध ( कैद ) करलिया।

इसी वर्ष में जब परगने डीडवाणे के गाँव धनकोली के ठाकुर ने राजद्रोही (बागी) होकर विशेष कर डीडवाणे के खालसे के गाँवों में तथा आस पास के दूसरे परगनों में भी लूट मार कर बड़ा ही उपद्रव मचा रक्खा था। यह केवल अपनी ही दुर्बुद्धि से इस निन्दनीय कर्म में प्रवृत्त नहीं हुआ था किन्तु आस पास के बहुत से ठाकुरों की भी आभ्यन्तर ( अन्दरूनी ) सहायता थी। इसके अत्याचार से वहाँ के लोग अत्यन्त भयभीत होगये थे, तब श्रीदरबार साहिब ने उक्त महतामीको स्वामिभक्त व समर विजयी जानकर इन्हें चार हजार वीरों की सेना दे उस उपद्रवको मिटाने के लिये वहाँ भेजा। इन्होंने स्वामी की आज्ञा पाते ही तुरन्त सेना समेत वहाँ जाकर उक्त अत्याचारी ठाकुरको समझाने का बहुत कुछ यत्न किया, जब उसको किसी प्रकार मानता न देखा तब सेना का युद्ध

करने की आज्ञा दी और स्वयं अनक शस्त्रों से सज्जित होकर संग्रामभूमि में शत्रुओं को ललकारा और युद्ध करना आरंभ किया। इनके मतियाघा भी वीर थे, वे इनक सामने बराबर लड़ने लगे। दोनों ओर क योद्धाओं ने अपनी २ वीरता दिखाकर खूबही युद्ध किया। इस प्रकार बराबर बीस (२०) दिन तक लगातार युद्ध होता रहा, जिसमें दो आक्रमण ( हमले ) ता बड़े ही भयङ्कर हुये। इस संग्राम में महताजी तथा राजकीय सेनाके वीरों न बहुत जोशके साथ भयङ्कर युद्ध करके अपनी पूर्ण शूरता दिखाई, अन्त में शत्रुओं का मार भगाया और युद्ध में जय पाकर धनकाशी की गद्दीपर अपना अधिकार कर लिया। फिर महताजी वहाँ की रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करके सेनाको ले नागपुर की ओर लौटे।

इस युद्ध में दोनों ओर के बहुत लोग मरे थ, महताजी क भी शरीर के पास ही होकर गोलियां निकलीं थीं, जिनके चिन्ह इनक कपड़ों में मिले, परन्तु ईश्वरकृपा स इनके अङ्ग में न लगीं।

यह बात सत्य है कि—

वने ऽरणे शत्रुजलाग्निमध्ये  
महार्णवे पर्वतमस्तके वा।  
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा  
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

अर्थ ॥

निर्जन वनमें, शत्रुओं के बीचमें, जलमें, अग्निमें, महा समुद्र के बीचमें तथा पर्वत के शिखर पर, सोये हुए, मस्त हुए तथा आपत्ति में पड़े हुए को पूर्वकृत पुण्य बचाते हैं ।

महाराजा के घरू ठाकुर लोगों में से एक वीर योधा जोरावरसिंह ( जो कृष्णगढ़ से इनके साथ जोधपुर आया हुआ था ) स्वामी के काम के लिये क्षणभङ्गुर प्राणों का मम छोड़कर वीररस से भरा हुआ मार जाणुं के शत्रुओं में जा भिड़ा, वहाँ अपनी शूरता दिखाता हुआ शत्रुओं के शस्त्रों से घायल होकर काम आया ।

धन्य है उस वीर को कि जो स्वामी के कार्य के लिये इस विनश्वर शरीर को छोड़कर उत्तम गति को प्राप्त हुआ, क्योंकि—

> द्विजा अपि न गच्छन्ति यां गतिं नैव योगिनः ।
> स्वाम्यर्थं सन्त्यजन् प्राणांस्तां गतिं याति सेवकः ॥

अर्थ ॥

जिस गति को ब्राह्मण और योगी भी कठिनाई से पाते हैं उस गति को स्वामी के लिये प्राणों को छोड़ता हुआ सेवक सुगमता से प्राप्त होता है ।

फिर जोधपुर आकर महताजीने श्रीदरबार साहिबों की सभामें युद्ध का सारा हाल वर्णन किया तो श्रीदरबार साहिबने मुसदीर के काम से सन्तुष्ट होकर उसके पुत्रको एक सहस्र १०००) रुपयों की रेखका नागौर परगनेका गाँव झधरासी ( आखमवासी ) प्रदान किया, वह गाँव अभीतक उसके वंशजोंके पट चला आता है।

श्रीमहाराजा साहिबने महताजी की इस सेवासे बहुत प्रसन्न होकर इनको स्वकरकमलाङ्कित एक खास रुक्का प्रदान किया, उसकी नकल निम्नलिखित है:—

| श्रीसिरंभर श्रीजल<br>धरनाथजी चरणसरण<br>राजराजेश्वर महाराजा-<br>धिराज महाराज<br>श्री तखतसिंघजी कस्य<br>मुद्रका । |
|---|

॥ श्रीनाथजी ॥

॥ मोणोत विर्जमल दीस सुमसाद बाचज तथा थण चाकीरी गदी कायम कीवी जणमें सेदिल हो अनंतर पणामें बंदगी कीवी जैंरीजि मालुम हुई जमोंपातर रावज माहरी मरजी है बरदासत हामी मा थ० १० ।

इसी वर्षमें परगने नागौर के गाँव लाटूके ठाकुर जोध सिंह के छोटे भाई भीमसिंहने जब बलात्कारसे लाटूपर अपना अधिकार ( कब्जा ) कर लिया तब जोधसिंहने इस दुःख से दुःखित होकर श्रीदरबारकी शरण आकर अपना सारा हाल स्वामीकी सेवामें निवेदन किया, परम कृपालु श्रीदरबार साहिबने महताजीको बुलाकर भीम सिंहको देशसे बाहिर निकालकर लाटूपर जोधसिंहका अधिकार करादेने की आज्ञा दी। महताजीने मालिक की आज्ञानुसार अपने कामदार साह शृंगारमल को पाँच हजार ( ५००० ) सेना देकर लाटूकी ओर भेज दिया, उसने वहाँ जाकर कई दिनतक लड़ाई की, अन्त में गढ़ी खाली कराकर जोधसिंह को सौंपदी और भीमसिंह को मारवाड़के बाहिर निकलवा दिया।

प्रिय पाठकगण ! देखिये ! बहादुरों के कृपापात्र भी कैसे बहादुर होते हैं, एक कवि ने कहा है कि—

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पूरुषः ॥

अर्थ ॥

पुरुष जैसों की सङ्गति करता है, जैसों की सेवा करता है और जैसा होना चाहे, वैसा ही हो जाता है।

सम्वत् १६०३ के अन्त में परगने सखावाटी के गाँव बठोठ के निवासी बड़े नामावर लुटेरे अत्याचारी सेखावत राम पुत्र डूंगरसिंह और जवाहिरसिंह नामके दो बड़े डाकू हुये। ये अपने दुष्कर्मों के कारण इंग्रेज सरकार से पकड़े जाकर आगरे के किले के कारागार (जेल) में नियन्त्रित (कैद) किये गये थे। कुछ समय के बाद सरकारों की असावधानी रहने से ये दोनों ही उक्त कारागार (जेल) से निकलकर भाग गये। फिर भी ये दोनों अपने उसी प्राकृतिक स्वभाव से देश में उपद्रव मचाते हुए अनेक मनुष्यों के धन व प्राणों को हरण करके तथा नसीराबाद की छावनी में सरकार इंग्रेज का खजाना लूटकर मारवाड़ इलाके के परगने परबतसर में मूंडसूके गाँव कचोलिया में पहुँचे। इस विषय की रिपोर्ट पेश होने पर राजपूताने के एजन्ट गवर्नर जनरल ने जोधपुर के पोलीटिकल एजन्ट के द्वारा श्रीमान् मरुधराधीशको उक्त बड़े डाकुओं को पकड़कर कैद करने का शीघ्र ही प्रबन्ध करने के लिये लिखा। तब श्रीदरबारसाहिबने महता विजयसिंहजी, सिंघवी कुशलराजजी और किलेदार अनाड़सिंहजी को फौज देकर पूर्वोक्त डाकुओं को पकड़ने के लिये भेजा और लाडणू, खरी तथा नींबी के जागीरदारों को भी फौज में जाने की आज्ञा दी।

इसके थोड़े अरसे के बाद एजन्ट गवर्नर जनरल ने अपने नायब लेफ्टिनेन्ट इ. एच. मॉकमसन और कप्तान्

हार्डकैसल् को मारवाड़ की सना के साथ होकर उक्त दोनों डाकुओं को शीघ्र ही पकड़कर निवद्ध (कैद) करने क लिये रवाना किया।

सं० १८ ४ के भावण वदि ७ (सप्तमी) क दिन मार वाड़ क पोलीटिकल् एजेन्ट मिस्टर एल् एल् अद् वेड् भी उक्त कार्य को शीघ्रता स करन क लिय मारवाड़ की फौज के साथ होगये।

इधर श्री महाराजासाहिब न भी फिर फौजबखी सिंघवी फौजराजजी, नींबाज के ठाकुर सवाईसिंहजी, भाद्राजण ठाकुर इन्द्रभाणजी, चण्डावल ठाकुर परताप सिंहजी और कंट्यालिया ठाकुर गोवर्द्धनदासजी आदिको फौज में जान की आज्ञा दी।

इन सबों न मिलकर विचार किया कि इतनी बड़ी फौज को लेकर एक ही ओर जान स यह काम शीघ्र नहीं बनेगा, इससे उचित यह है कि इस सना क ३ (तीन) दल बनाकर यदि पृथक् २ खोज करेंगे तो आशा है कि शीघ्र ही कार्य सिद्ध होजायगा, इस सम्मति क अनुसार वसाही करक तीनों दल अलग २ उन डाकुओं का पता लगाने को चल।

इन तीनों दलों में से एक दल में पोलीटिकल् एजन्ट और सिंघवी फौजराजजी, दूसर में केप्टन् मोंक् मसन् व

क़िलेदार अनाड़सिंहजी और तीसर में कप्तान् हार्डकैसल्, महता विजयसिंहजी तथा सिंघवी कुशलराजजी मुखिया थे।

इस खबर को सुनते ही डाकू जवाहिरसिंह तो बीका नेर के इलाके में चलागया था, उस वहींपर बीकानेर राज्य के अधिकारियों ने पकड़ लिया।

और इधर तृतीय दलके अधिकारी कप्तान् हार्डकैसल् तथा महता विजयसिंहजी ने अपने शारीरिक व मानसिक पूर्ण परिश्रम से बड़े उपद्रवी डाकू डूँगरसिंह का पीछा कर जसलमेर इलाके के गाँव गिरादड़े के पास मढ़ी में उसे जापकड़ा और नियन्त्रित ( कैद ) करलिया।

इस काममें कप्तान् हार्डकैसल् के साथ रहकर महता जीने अपनी बुद्धिमानी व वीरता से जो श्रम किया वह उक्त कप्तान् साहिब के सर्टिफिकेट से प्रसिद्ध होगा।

श्रीमान् मरुधराधीश ने उक्त डाकू को पकड़ने की खबर सुनते ही अत्यन्त प्रसन्न होकर स्वदस्तखतसाहित एक खास रुक्का महताजी के पास वहींपर भेजा था उसकी और दीवानसाहिब के पत्र की तथा कप्तान हार्डकैसल के सर्टिफिकेट की नकल निम्नलिखित है—

श्रीदरबार साहिबके खास रुक्केकी नकल।

मोहर

श्रीनाथजी ॥

मूणोत विजैमल दीसे सुप्रसाद वांचजो तथा बंदगी चाकरी करे सो मालुम है सेस्तावत जुंगा मथाराने सम चाकरी दीज थारी हाजरी मालुम होसी प्रसाद पद १२

वीवानसाहिबके पत्रकी नकल।

मोहर

श्रीजलंधरनाथजी सत्य है

श्रीमहाराजाजी

*भीदरबारसाहिबों के हस्ताक्षर*

बंदगी पाबी सो मालुम हुई सारांन खासरी कीन

स्वारूपश्री मताजी श्री विजैमलजी आग्य जोधपुर या मूता खिवसीचन्द लिखावतं जुहार बांचजो अठारा समा चार श्रीजीरा तजप्रतापसू भला छै राजरा सदा भला चाहीजे अपरंच अठारा सेखावत डूंगरसिंघन पकड़िया तिणरा कागद आया सो श्री हजूर मालम हुआ, राज इण कामरी खबरदार काम पेस चलाया जिणसूं श्री हजूर सू राजने खातरी फुरमाई छै, राजन भादराजण राठोड़ इन्दरभाण सम्वसाहरसिंघोत, न जावलारा राठोड़ कसरी सिंघ चांदसिंघोत, न रायपुररा पिंडों, न मामसिंघ माधो सिंघोत, न रासरा राठोड़ भीमसिंघ मामसिंघोत, न खाटण् बहादुरसिंघ मगलसिंघोत, न पीपलाद राठोड़ सादूलसिंघ रतनसिंघोत, न लूणवारा राठोड़ बिजैसिंघ उदभाणोत, न चौंपावत जोधसिंघ रामसिंघोत, न राठोड़ लिछमणसिंघ पन्मासिंघोत, न राठोड़ हमीरसिंघ परताप सिंघोत, न चौंपावत करणसिंघ, कायमखौंनी मानतखौं, भीकूखौं, जाधा थानसिंघ चदसिंघोत, न सैयद अकबर अली तालकग कायमखानी इन्दरखौं, रसालदार पुनालाल तालकरा मिरजा मैमुखबग, शत गुलाबमैदीमखौंजी तालक मिरजा ममअली, पंचाली आसदास परतापमलरा, चंगर सारा हमगीर रयात खाटणरा बहादुरसिंघ मगलसिंघोत,

न लिछमणसिंघ पदमसिंघोत, इण काम में विशेष हमगीर रया, न फेर इण काम में तहदिल, तिणाँने पाँच रुपया दणरी राज खातरी कीधी, सा सारी मालुम हुई, हम अठासूं सदासाहब न लिखायेन हुई है, सो पाछो जाब आवे जितरे डूगरसिंघने दौलतपुराग किला में मायतासूं राखसा, बडा साहबरा जाब आयाँ अठासूं लिख्यां जिण दब कीजा, न राजन याद फरमावसी सु अठ यदुमां आसा नद राजरी अरमसूं राज खातरी कीधी है जिणोंरी बरदासत हायजावसी, राजम्हातरी कीधी जिणरी भी हमूर साहब फराय दरावसी न राज बंदगी आछी सर कीधी जिणस थी हमूरसाहब घणी भरवानी फुरमाई है सा घणी खुशी रखावसा, सं १६०४ रा कातो सुद ६

Copy of Captain Edmond Hardcastle's certificate

---

Doongar Singh has at last been captured through the exertions of Bijeh Singh, Hakim of Nagore and I cannot sufficiently praise the skill perseverance and energy with which his arrangements were made and carried out. I trust he will receive from his own Sovereign the commendation nd reward he so well merits.

(Sd.) EDMOND HARDCASTLE,
Officiati g Assi tant Agent Governor General,
Rajputana

CAMP NAGORE
*November 20th 1847*

कप्टन् हार्डकैसल् के सर्टिफिकेटका भाषान्तर।

नागौर के हाकिम बिजैसिंह के उद्योग से अन्त में डूंगर सिंह पकड़ागया और उन्होंने अपनी चतुराई, दृढ़ता व हिम्मत से जो युक्तियां काम में लाई, उनकी मैं यथेष्ट प्रशंसा नहीं कर सकता। मैं विश्वास करता हूं कि य अपने मालिक स शाबासी व इनाम पावेंगे, जिनके कि य पूर्ण योग्य हैं।

( हस्ताक्षर ) एफ्.मफ्. हार्डकैसल्,
ऑफिशिएटिङ्ग असिस्टेन्ट
गव्हर्नर जैनरल् ( राजपूताना )

कम्प नागौर,
ता० २ नवेम्बर
सन १८४७

सन १८०४ में जब महताजी डूंगरसिंह व जवाहरसिंह का पकड़नके उद्यम में लगे हुए थे इसी समयमें जब भी दरबारसाहिब को ज्ञात हुआ कि सीकरके रावराजा लिछमणसिंह के पुत्र मुकनसिंह व हुकमसिंहभी बागी होकर डूंगरसिंह जवाहरसिंह से मिलेहुए मारवाड़ के गाँवों में इधर उधर उपद्रव मचारहे हैं, तब भीजी साहिबने महताजी व किलदार अनाड़सिंहजी के नाँव इन दोनों बागियों को भी पकड़नेका हुक्म भेजा। तदनुसार इन्होंने पूर्ण परिश्रम करके जेसलमेर इलाके के गाँव भडूमें उक्त दोनों बागियोंको पकड़ लिया। इस कार्यमें लेफ्टिनन्ट ई. एच्. मॉक मेसन् असिस्टेन्ट टू दी एजेन्ट गवर नेर जनरल् ( राजपूताना ) भी साथ थे।

इस काममें महाराजी ने जो अपनी बुद्धिमानी व वीरता दिखाई थी वह उक्त साहिब की चिट्ठी ( जो कप्तन् हार्ड कैसल् के द्वारा आई थी ) से तथा दीवानसाहिब के पत्र से पाठकों को विदित होगी ।

**Copy of Lieut: Monck Mason's letter to Captain Hardcastle.**

---

CAMP DAULATPURA,
*5th October 1847*

MY DEAR HARDCASTLE,

Please explain this to Bijay Singh, and say that I am sorry that I have so long delayed to comply with his wishes that I should write him. It may be gratifying to him to know that Colonel Sutherland has sent my report (in which his name appears) to Government.

Yours ever

( Sd. ) E. H. MONCK MASON

कप्तन् ई एच् मोंक् मसन् न कप्तन् हार्डकैसल् को जा चिट्ठी लिखी थी उसकी नकल ।

कम्प दौलतपुरा,

ता ५–१०–१८४७

मरे प्यारे हार्डकैसल् !

कृपा करके विजयसिंहजी को यह कहदीजिये, यह खेद का विषय है कि मुझे उनकी इच्छानुसार पत्र दने में विलम्ब हुआ, उन्हें यह जानकर हर्ष हागा कि मरी रिपार्ट ( जिसमें उनका नाम है ) केप्टन् सदरलेण्ड ने सरकार गवर्नमन्ट का भेजदी ।

सदा आपका—

( ह० ) ई० एच्० मोंक् मेसन्

Copy of Lieut: Monck Mason's letter to Mehta Bijay Singhji, received through Captain Hardcastle, with the above letter

---

MARWAR, CAMP DAULATPURA,

*5th October 184*

Lieut: Monck Mason presents his complimei ts to Bijay Singh—the Hakim of Nagore—and begs

that he will accept his private thanks for the assistance he so readily afforded on the occasion of the forced march into the district, and the capture of Mukanji and Hukamji on the 4th September last—a body of horse under the Hakim having accompanied the force, with Lieut: Mason commanded by Amar Singh Killedar of Jodhpur Were it Lieut: Mason's province to do so he could speak in the highest terms of the personal perseverance activity, and bravery evinced on said occasion by Bijay Singh, in which he was surpassed by none—he does not however presume when he testifies to the pleasure he derived during a short acquaintance from personal communication with the Hakim on account of his intelligence, agreeable conversation and manners and he will always be delighted to hear of the health and welfare, and to be reckoned among the friends of the Hakim.

( Sd. ) E. H. Moxon Mason,

*Assistant A G G*

*( Rajputana. )*

जो पत्र कप्तान् ई० एच मौंक् मेसनने केप्टन् हार्ट कैसल् की चिट्ठी के साथ महता विजयसिंहजी को भेजा था उसका भाषान्तर।

मैं (लेफ्टिनन्ट मौंक मेसन्) नागौर हाकिम महता विजयसिंहजी को प्रणाम करता हुआ यह निवेदन करता हूं कि आपने मुझे अपने परगने में सेना के कष्टकारक कूच के समय ५२ तथा गत ४ सेप्टेम्बर को मुकनजी और हुकमजी को पकड़ने के अवसर पर जो सहायता दी है, उसके लिये मेरा खानगी धन्यवाद स्वीकार हो।

किलादार अनाड़सिंहजी के सेनापतित्व में जो सेना मेरे साथ थी, उसके साथ एक रिसाला आपकी अध्यक्षता में भी था।

यदि मुझे इस बात का अधिकार होता तो उस अवसर पर आपने जो अद्वितीय धैर्य, स्फूर्ति और वीरता दिखलाई उनकी अत्यन्त प्रशंसा करता, तथापि जो मुझे इस थोड़े से समय की जान पहिचान में आपकी मुलाकात से तीव्र बुद्धि उचित वार्तालाप तथा उत्तम व्यवहार के कारण आनन्द प्राप्त हुआ है उसका वर्णन करने में मैं अनाकानी नहीं करता हूं।

मुझे आपके स्वास्थ्य तथा आनन्द के समाचार सुनने से और अपने मित्रों में मेरी गणना किये जाने से सदा हर्ष होता रहेगा।

## रीमानसाहिबके पत्रकी नकल ।

### श्रीमर्थंधरनाथजी सत्य है

### श्रीमहाराजाजी

स्वारूपश्री महताजी श्री विजैमलजी जोग जोधपुर यो सूता लिखमीचन्द लिखावतं जाहार बांचजो अठारा सम चार श्रीजीरा तेज प्रतापसूं भला छै, रामरा सदा भला चाहिजे, अपंच शेरखावत मुकनजी हुकमजीनुं गांव मञ्जु में पकडिया जिण में राज सामलथा सु सारा समचार कागदोंसु श्रीहजूर मालम हुआ सु आछो काम किया, इणें सिवाय सावनुं न अनाड़सिंहजीन शीववाण पोचा यन पछे राज शीकर हाकेसल् साहब सामल हुसो, राजरे साथ सरदारोंरी आसामियों न मेहन्त बसतमारतीया जिणांरी तरफरा समचार राज लिखाया सो श्रीहजूर मालम करादिया है, कागद् समचार लिखिया करसो, स १८ ४ रा भादवावद ११ ।

संवत् १९० के श्रावण सुदी ६ को श्रीदरबार साहिब ने प्रसन्न होकर एक मोतियों की कंठी महताजी को प्रदान की ।

इसी वर्ष के पौष सुदी ६ को श्रीदरबार साहिब ने महताजी को स्वामिभक्त व कार्यकुशल मानकर एजन्सी की वकालत का अधिकार सौंपा, उस समय जोधपुर के पालीटिकल एजन्ट मेजर डी एष् मॉलकम् साहिब थ।

मेहताजीने बड़ी सत्यता व कार्यकुशलता से यह काम किया, जिससे उक्त साहिब के हृदय में इनका जो विश्वास दृढ होगया था, वह कर्नल् सर आर शेक्सपियर साहिब ( जो माल्कम् साहिब के स्थान पर आये थे ) के नाम मेहताजीका परिचय करानेको जो चिट्ठी माल्कम् साहिब ने दीथी उससे प्रसिद्ध होगा।

Copy of the introductory letter from Major D H. Malcolm to Col. Sir R Shakespear

---

JODHPUR,

*15th August, 1851*

MY DEAR SIR,

This will be delivered to you by Bij y Singh who has been the Maharaja's Vakil for nearly three years I have no hesitati n in recommending him as a man you may safely trust as in the course of our long intercourse I have never found him willfully deceiving me and what is rare among the Marwar civil officers very truthful.

Yours very sincerely

( Sd. ) D H MALCOLM

मेजर डी एच मास्कम् साहिबने कर्नल् सर आर शेक्सपियरको जो पत्र लिखाया उसका भाषान्तर।

जोधपुर,
ता० १५ अगस्त सन् १८५१

प्रिय महाशयजी !

यह पत्र आपको विजयसिंहजीके द्वारा मिलेगा जो प्रायः तीन वर्ष से मेरे पास महाराजाकी ओरसे वकील हैं।

मैं बिना किसी रुकावट के सिफारिश करता हूं कि यह एक ऐसे मनुष्य हैं जिनका आप निर्भय विश्वास कर सकते हैं, क्योंकि इन्होंने इतने समय के आपस के बर्ताव में जानबूझकर मुझे कभी धोखा नहीं दिया।

इस के अतिरिक्त ये बड़े सत्यवादी हैं, जो गुण मारवाड़ी ऑफीसरों में बहुत कम पाया जाता है।

आपका निष्कपटी मित्र—
( द० ) डी० एच० मास्कम्

सं १६०५ के आषाढ़ वदी ८ ( अष्टमी ) गुरुवार का शुभलग्न में उक्त महताजी ने अपने पुत्र सरदारसिंहजी का विवाह भंडारी जीवणचन्दजीकी पुत्री के साथ बहुत ठाटपाट से किया, उस महोत्सव में बड़े २ सरदार, महा

राजा, रावराजा तथा मुसाहिब आदि बहुतसे सभ्य पुरुष एकत्रित हुए थे, इस हर्ष के कार्य में महताजी ने बड़ी उदारता दिखाई।

सं० १६०८ के भाद्रपदशुक्ल १३ (त्रयोदशी) के दिन श्रीदरबार साहिब ने मूता मुकनचन्दजी, जोशी प्रभुलालजी सिंघवी फौजराजजी और महता विजयसिंहजी इन चारों को मिलाकर दीवानगीका काम करने की आज्ञादी। तदनुसार इन चारों ने पौषशुक्ल १ प्रतिपदा तक यह काम किया।

श्रीदरबार साहिबने जब महताजी को उक्त तीनों के साथ दीवानगी का काम सौंपा था उसी समय से कृपाकर इनका एक सहस्र रुपयों का मासिक वतन नियत कर दिया था।

इतने पर्यंतक महताजीने अनेक प्रकार के राज्य के काम करके जो अनुभव प्राप्त किया वह किसी से छिपा नहीं था, राज्य के सकल लोग इनके सद्गुणोंका प्रत्येक स्थान पर वर्णन किया करते थे।

इसी प्रकार श्रीदरबार साहिब के चित्त में इनकी स्वामि भक्ति, सत्यता, धीरता, सर्वप्रियता तथा न्यायपरायणता आदि गुणों के कारण इनका पूर्ण विश्वास हो गयाथा जिससे श्रीजी साहिब ने प्रसन्न होकर संवत् १६०८

क पाप सुदी २ (द्वितीया) के दिन अकल महताजी ही को दीवानगी का दुपट्टा प्रदान किया, यह काम सं० १६०६ के मैंगसर वद ? तक महताजी क अधिकार में रहा।

बादमें श्रीदरबार साहिबक बाईजी साहिबा श्रीचाँदकँवर बाईजीलाल क विवाहकी तैयारी का काम महता विजयसिंहजी तथा जाशी प्रभुलालजीका सौंपा गया था। उक्त बाईजी साहिबा का विवाह स० १६०६ क जेठ सुदी ११ का शुभलग्नमें जयपुर दरबार श्रीरामसिंहजी साहिब क साथ हुआ, इस कार्य में महताजीन पूर्ण प्रबन्ध करक उक्त दोनों रईसोंको प्रसन्न किया।

फिर आषाढ़ बदी ७ का जब बाईजी साहिबा जयपुर पधारे तब महताजी, पर्वाँग नारकरणजी तथा ठिकाना बड़ु, सावीण व डाहियांवक जागीरदारोंका पहुँचाने जानेकी आज्ञा हुई, तदनुसार महताजी वहाँ जाकर और श्रीबाईजी साहिबाकी सरकारका यथोचित प्रबन्ध करके सं १६१० क जेठसुदी में वापिस जाधपुर आये।

सं १६११ क फाल्गुनशुक्ल ४ (चतुर्थी) को श्रीदरबार साहिब सकुटुम्ब श्रीमती भागीरथी (गङ्गाजी) की यात्रा करने के लिये पधारे, उस समय उक्त महताजी को भी अपनी सेवामें साथ लेगये थे।

श्रीदरबार साहिब श्रीहरिद्वार व मथुराकी यात्रा करके जाधपुरकी ओर लौटते हुये रियासत भरतपुर, जयपुर और

कृष्णगढ़ होकर तीर्थगुरु पुष्कर में स्नान करके आषाढ़ सुदी ४ (चतुर्थी) को दिन पुनः अपनी राजधानी में पधारे, इस यात्रामें महताजी आदि से अन्त तक स्वामीकी सेवामें तत्पर रहे।

संवत् १६१२ के श्रावणसुदी ४ को श्रीदरबार साहिबन स्वामीदी परमाकर जिनको पोशाक प्रदान की, उसमें निम्नलिखित चीजें थीं —

१ पचमर्शीदल (सुनहरे बूटीदार)
१ अंगरखा
१ साड़िया (सीलूक रंगका कारदार)
१ पगड़ी (किरमची)
१ उपरणी (सुनहरी)

परमकृपालु श्रीदरबार साहिब की अपने सब अनुचरों पर इतनी अविचल दया रहती थी कि सिंघवी फौजराजजी का देहान्त होने पर भी श्रीहजूर साहिब ने फौजबख्शीका काम स्वालम करके उन्हीं के कामदार मुता पालूराम को उस काम करने की आज्ञा दी और उसका निरीक्षण सं० १६१२ के आषाढ़ सुदी १२ को महताजी को सौंपा, जिसे सं० १६१८ के श्रावण बद १ तक ये करते रहे।

सं० १६१३ के कार्तिक सुदी ८ को दीवानगी का आरम्भ श्रीदरबार साहिबने स्वालम करके उस कामको करनेके लिये निम्नलिखित चार मुसाहिबों को आज्ञा दी:

१ महता विजयसिंहजी
२ महता हरजीवणजी
३ साह राममलजी
४ पवाँर अनाड़सिंहजी

सो इन चारोंने क़रीब ढाई महीनेतक तो मिलकर काम किया, बाद में पौष शुक्ल १ के दिन अकेले महताजी को ही बालसमद के महलों में दीवानगी की मोहर देकर उक्त कार्य करने का हुक्म दिया, इस कामको इन्होंने सं० १६१५ के ज्येष्ठ सुदी ७ (सप्तमी) तक किया।

सं० १६१३ के पौष सुदी ११ को श्रीदरबार साहिब ने कृपा करके महताजी को तीन गाँव प्रदान किये।

जोधपुर परगनेका गाँव चाव वर्फे पीपाड़ रेख १६००)

परगने सोजतका गाँव दादिया रेख रु० ५००)

परगने सामतका गाँव भद्रावतोंकी वासणी रेख ५००)

इन तीनों ग्रामों की वार्षिक आय करीब तीनसहस्र रुपयों की थी, ये गाँव सं १६१५ के ज्येष्ठ सुदी ७ तक रहे।

फाल्गुन बदी ३ (तृतीया) को श्रीदरबार साहिबने प्रसन्न होकर इनको एक कसरिया पाग और ज़रीन चाबखबन्दी प्रदान की।

सं० १६१४ के श्रावण में गाँव बीठोरके ठाकुर न श्रीदरबार की आज्ञा से गाँव हरजी के ठाकुर क पुत्र कानसिंह को अपने गोद लिया तिसपर आउवे क ठाकुर कुशालसिंहजी न अमसन्न होकर अपने भाई पृथ्वीसिंह स कानसिंहको मरवाडाला, यह खबर श्रीदरबार साहिब ने सुनकर पोलीटिकल् एजेन्ट की सम्मति ले इस अप राध में उन्हें ( आउवेठाकुर का ) पदच्युत करके दण्ड देने के लिये महता विजयसिंहजी, रावराजा राजमलजी, किलेदार अनाडसिंहजी, सिंघीजी, कुशलराजजी और महताजी क छोटे भाई छत्रसिंहजी को चार हजार फौज देकर आउवे भेजा।

यह खबर सुनकर मास भाद्रपद में ठाकुर बिशनसिंहजी गूलर, ठाकुर अजीतसिंहजी आलणियावास व सरदार भी आउवे का सहायता देन क लिये उनस आमिले, इस समय आसोप ठाकुर शिवनाथसिंहजीने भी आउवे ठाकुर को बहुत सहायता दी थी, फिर एरणपुर की छावनी क इंग्रेज सरकार क विरोधी सिपाहियों में स ५०० सैनिकों ( सिपाहियों ) का भी आउवे ठाकुर न अपनी सहायता के लिये बुलालिया।

आश्विन कृष्ण ४ ( चतुर्थी ) का युद्धका आरंभ हुआ उस दिनके युद्धमें श्रीदरबार की फौजमें स परगन मालार क गाँव मीठड़ी क ठाकुर का लड़का बाघसिंह तथा और भी योद्धा वीरताके साथ लड़कर काम आये।

पर्श्चात् उन्होंने आउवे के सहायक सैनिकों (सरकार इंग्रेज के विरोधी काले सिपाहियों) ने युद्ध नियम के विरुद्ध पिछली रात ही में जब कि श्रीदरबारकी सेना के लोग अपने आवश्यक शौच स्नानादि कार्य में लग हुए थे, अकस्मात् ही आक्रमण (हमला) किया। राज कीय सेनाके वीर योद्धाओं ने उस समय असावधान होने पर भी समयानुसार यथाशक्ति बल दिखाया, जिसमें रावराजा राजमलजी, किलेदार अनाड़सिंहजी और १०० वीर तो काम आये और २०० (दोसौ) मनुष्य जख्मी हुए।

इस युद्ध में महताजी के घरु १० (एकसौ) मनुष्य साथ थे, उनमें से ४ वीर तो काम आये और दो जख्मी हुये।

बाद में पालीटिकल एजन्ट कप्तान् ई० एच० मौंकमेसन् आश्विनवदी १२ को जोधपुर से आउवे की ओर रवाना हुए, ये रैबयाग से वहां जाते ही अपनी सेना के भ्रम से बागियों के कम्प में घबड़ाकर जा पहुंचे, वहां घुसते ही एजन्ट साहिब बागी सिंपाहियों के हाथ से आसोज वद २० को मारे गये।

गवर्नमेन्ट के विरोधी उक्त काले सिपाही आउवे से निकलकर नागोर परगनके गौंव भायल, भडाणी, कुचेरा आदिमें लूट मार करने लगे, तब श्रीदरबार की आज्ञासे ठाकुर कुशालसिंह, ठाकुर माधवराजसिंह तथा महता विज

यसिंहजी और सिंघवी कुशलरामजी ने सेना लेकर उनका पीछाकर उन्हें मारवाड़ की सीमाके बाहिर निकाल दिया।

उस समय श्रीगवर्नमेंन्ट सरकार की सेना जो देहली से आरही थी, उसने उक्त बागियों को प्राणदण्ड दिया।

आसोप ठाकुर शिवनाथसिंहजी ने श्रीदरबार साहिब के विरुद्ध आउवे ठाकुर को सहायता दीथी, उस अप राध का दण्ड देने के लिये श्रीदरबार की आज्ञा पाकर महता विजयसिंहजी ने ठाकुर कुशालसिंह, ठाकुर माधवराम और सिंघवी कुशलरामजी के साथ बहुतसी सेना लेकर पौष महीने में आसोप के गाँव चढ़ कर आक्रमण किया। वहां पर करीब दो महीने रहकर युद्ध करते रहे, अन्त में आसोप ठाकुर को श्रीदरबार के चरणों में ला उप स्थित किया और पूर्वोक्त अपराध के दण्ड में बड़लू श्री दरबार की आज्ञानुसार आसोप से छीनकर खालसे करलिया।

बाद में राजपूताने के एजन्ट गवर्नर जनरल ने सेना लेकर आउवे पर चढ़ाई की, इधर श्रीदरबार साहिब ने महतामी आदि अपने प्रधान वीरों को सेना देकर आउवे जाने की आज्ञा दी। इन्होंने वहां जाकर युद्ध करना आरम्भ किया, अन्त में दोनों ठाकुर को पदच्युत करके आउवा खालसे करलिया।

सं० १६१५ के कार्तिक बदि प्रतिपदा के दिन श्री दरबार साहिब ने कृपा करके इनको पाग ( मंदील ) और दुपट्टा प्रदान किया।

सं० १६१६ के ज्येष्ठ बदि ५ (पंचमी) के दिन इनके पुत्र सरदारसिंहजी को श्रीदरबार साहिब ने कोरदार कसरिया पगड़ी प्रदान की।

धाणराव के कामदार लाला शिवकरण व रूपनगर के सोलंकियों के कामदार मूथा परतापमल का उनके अनुचित कर्मों के कारण श्रीदरबार की आज्ञा के अनुसार महताजी ने सं १६१६ के आषाढ़ सुद ८ को पकड़ कर कैद किया।

सं १६१६ में मारवाड़ के सिरायतों में से आउवा, आसोप, आलणियावास, गूलर और बाजूवास के ठाकुरों ने बागी होकर जब इधर उधर गाँवों में लूट मार आदि कुकर्मों से उपद्रव मचाया, तब श्री दरबार साहिब ने महता विजयसिंहजी और जोशी हंसराजजी को इस उपद्रव को शान्त करने के लिये ४००० ( चार हजार ) फौज देकर जाने की आज्ञा फरमाई।

तदनुसार उक्त दोनों ने जाकर इस अशान्ति को मिटाने के लिये बहुत समय तक वहां रहकर गाँवों का सुप्रबन्ध रक्खा और मुठभेड़ होने पर कईबार लड़ा

इयां की, उन में से एक लड़ाई परगने सोजत के गांव गमनेई की नाल में ज्यष्ठ वदि १४ को हुई, उसमें इनके परू तीन वीर योद्धा तो बड़ी शूरता के साथ युद्ध कर काम आये और कतिपय सैनिक घायल हुये, अन्त में इन्होंने उक्त उपद्रवी ठाकुरों पर दण्ड देकर सरल कर दिया, इस नौकरी से प्रसन्न होकर श्रीदरबार साहिब ने स्वहस्तलिखित खास रुक्का प्रदान किया, उसकी नकल यह है।

श्रीनाथजी ॥

॥ पता विसेसलक्स्य सुप्रसाद बाचमे तथा हमार बारोठीयों सु झगड़ो हुवो, तिण में हमगीर होय झगड़ो कीया, न बारोठीयों न सजा दीवी, सो थारी हमगीरी मालम ही जीई सजा दीवी, जमाखातर राखन परवा सत रेसी जठ सुद ४।

सं० १९१८ के माघ शुक्ल २ (द्वितीया) के दिन श्री दरबार साहिबन प्रसन्न होकर निज की कसूंम्या रंग की १ पाग प्रदान की।

सं० १९१९ के श्रावण वदि १ (प्रतिपदा) को श्रीद रबार साहिब न दीवानगी का ओहदा खालस कर अन्य चार मुसाहिबों के साथ महकमे दीवानगी का काम करन की आज्ञा दी, सो इस काम को इसी वर्ष के चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तक इन्होंने किया।

इसी वर्ष के कार्तिक वदि १३ (त्रयोदशी) के दिन इनकी माता ( जो अत्यन्त बुद्धिमती, गुणवती और अति अनुभवशीला थीं और कृष्णगढ़ाधीश के जनाने सरदार मानी श्री कछवाइजी व राणावतजी प्रत्येक कार्य उनकी सलाह से करते थे और जो ईश्वरभक्ति तथा धर्मकार्य में भी अहर्निश दत्तचित्ता थीं ) का जोधपुर में ही स्वर्ग वास हुआ, तब महाराजी ने शोकग्रस्त होकर श्रद्धा भक्ति से उनकी और्ध्वदैहिक क्रिया की और ब्राह्मण, साधु तथा अपनी जाति का भोजन कराने में बहुत धन व्यय ( खर्च ) किया।

सं० १६१६ के वैशाख सुदि १४ को महाराजी के पुत्र सरदारसिंहजी का अब जालोर की हुकूमत वकर विदा किया, उस समय मोतियों की कंठी व दुपट्टा इनायत फरमाया।

सं० १६२ में श्रीदरबार साहिब के बाईजीलाल श्री इन्द्रकँवर बाइजी तथा अहमदनगर के भूतपूर्व महाराजा श्री करणसिंहजी के स्वर्गवासी पुत्र पृथ्वीसिंहजी के बाईजीलाल श्री केसरकँवर बाईजी का विवाह जयपुर महाराजा श्री रामसिंहजी के साथ निश्चय होनेपर कुचामण ठाकुर केसरीसिंहजी व महता विजयसिंहजी और नाजर हरकरणजी का श्री चाँदकँवर बाइजी साहिबों को लेने के लिये जयपुर भेजे, सो ये बाइजी साहिबों को लेकर बरात के साथ ही माघ वदि ८ को जोधपुर पहुँचे, माघ

वदि ६ ( नवमी ) को जोधपुर में विवाह बहुत धूमधाम से हुआ, फाल्गुन वदि ५ (पञ्चमी) को बरात पीछी जयपुर की ओर रवाना हुई, तब श्रीदरबार साहिब ने उक्त तीनों बाईजी साहिबाओं का पहुँचाने के लिये महता विजयसिंहजी को भेजा, महताजी ने कुछ दिन तक वहां रहकर जब जोधपुर आने की सीख की तब श्रीजयपुर दरबार साहिब ने हाथी सिरोपाव व पालकी का सिरोपाव इनको प्रदान किया।

इस वर्ष में फाल्गुन सुदि ४ ( चतुर्थी ) को इनके पुत्र सरदारसिंहजी को श्रीदरबार साहिब ने नागौर की हुकूमत का काम करने की आज्ञा दी।

बरडव का ठाकुर जब बागी होकर मुलक में लूट खोस करने लगा, तब श्रीदरबार साहिबों ने सं० १८२० के वैशाख वदि १ के दिन महताजी को बहुतसी फौज देकर उस बागी ठाकुर को पकड़ने के लिये भेजा। महताजी ने वहां जाकर उससे लड़ाई की, उसमें इनके ५ (पांच) आदमी मारेगये, अन्त में उक्त ठाकुर को उसके २२ आदमियों के साथ पकड़कर श्रीदरबार के चरणकमलों में उपस्थित ( हाजिर ) किया।

इस सेवा से प्रसन्न होकर एक खास रुक्का प्रदान किया उसकी नक्ल यह है।

भीनाथजी ॥

मेहता भिनेमलकस्य सुमसाद बाबज तया परङ्गा बेमोटरा साइसानियां न पकड़िया न सजावार किया ने दूजो ही वठार पासे चोर चकार रो बंदोबस्त कीयो सु मालुम हुवो थाँसू निरंतर मरजी है, फेर ही इणीतरे बंदोबस्त राखजे परदास्त हुसी सातरजमां राखजे काती सुद ७।

सं १९२० के वैशाख में इनके पुत्र सरदारसिंहजी अपनी धर्मपत्नी को साथ लेकर श्री हरिद्वार की यात्रा करने को गये, वहां से आते समय श्री यमुनाजी के तटपर गाँव फर्रुखी में ज्येष्ठ वदि १ के दिन उनकी स्त्री का देहान्त होगया, पत्रद्वारा इस शोकसमाचार को सुनकर महताजी शोकवश हुए।

श्रीदरबार साहिबने महताजी की भक्तियुक्त सेवा से प्रसन्न होकर इनको सं० १९२१ के माघ शुक्ला ११ (एकादशी) के दिन परगने नागौर का गाँव राजाद। जिसकी रेख है ०) तीन हजार रुपयों की थी) प्रदान किया।

महताजी ने अपने पुत्र सरदारसिंहजी की प्रथम पत्नी का देहान्त होने के कारण उनका द्वितीय पाणिग्रहण संस्कार (विवाह) फाल्गुन शुक्ल २ (द्वितीया) को मूता चदयराजजी की पुत्री से कराया।

इसी वर्ष में जब श्रीदरबार साहिब रीवाँ विवाह करने के लिये पधारे थे, तब इनकी सेवा में महता विजय सिंहजी के छोटे भाई छत्रसिंहजी थे, दैववशात् छत्रसिंहजी बनारस में विशूचिका ( हैजा ) रोग से ग्रसित होकर अकस्मात् इस असार संसार को छोड़कर मुक्त हुए।

इस कृपापात्र विश्वासी सेवक के मृत्यु से श्रीदरबार साहिब के चित्त में बड़ा शोक हुआ उस समय श्रीमानों ने जोधपुर को महता विजयसिंहजी के पास एक शोक सूचक पत्र अपने करकमल से लिखकर भेजा था, उस की नकल यह है।

॥ श्रीनाथजी ॥

महता विजेमलकस्य सुप्रसाद बाचजे तथा दरबाररा काम में बन्दगी चाकरीवर करी सु मालम है, खातरजमां राखजे मारी मरजी है बरन्तातत रसी सु काई बातरी चिन्ता करजे मती, चाकर री कसर पड़ी है सु मांने घणीसी मालम है नहीं पण परमेश्वर में नाजोर री बात है असाड़ बद ४।

सं० १९२२ में ग्राम गलणियाव के जाधा मूलसिंह का बीकानेर रियासत के गांव बागमू स्थाग के बीदावत राज पुत्रों ने मारडाला जिससे जाधा और बीदावतों के आपस में बड़ा भयंकर वैर पैदा हुआ जिसपर अपने

अपने यूथ बाँध कर दोनों ने परस्पर गाँवों में लूट मार करना आरंभ किया।

इस जोधा और चीदावतों के आपस के वैरने इतना भयंकर रूप धारण किया कि गाँवों के रास्ते बन्द होगये, ऊँटों की कतारें तथा बटाही लूट गये और कइयों के प्राण भी गये। यह खबर सुनकर श्रीदरबार साहिबोंने बहुतसी फौज देकर महताजी को इस विग्रह को शान्त करने के लिये भेजा, महताजी ने वहाँ जाकर अपने बुद्धि बलसे दोनों यूथों को समझाकर तथा भय दिखाकर उन दोनों की आपस में मित्रता कराकर परस्पर स्नेह पूर्वक प्रेमकी मनुहार करादी, इस काम से श्रीदरबार साहिब बहुत प्रसन्न हुए।

सं १८२७ के कार्तिक वदि ४ को दीवानगी का ओहदा, जो पहिले से खालसे था, उसका काम करने की महता विजयसिंहजी व ल्हीची उम्मेदकरणजी को आज्ञा हुई, जिसको इन्होंने वैशाख वदि ११ तक किया।

इसी वर्ष के वैशाख वदि ३ को किलेदारी का ओहदा खालसे कर महता विजयसिंहजी, मुंशी हाजी महम्मदखाँजी और महता हरजीवणदासजी के सुपुर्द हुआ, इस काम को उक्त तीनों ने सं १८२८ के मँगसर वदि १ तक किया।

पोलीटिकल् एजेन्ट एफ एफ निक्सन साहिब के सर्टिफिकटका भाषान्तर।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि जोधपुर के मुसाहिब महता विजयसिंहजी मेरे समय में अक्सर मेरे पास उपस्थित होते थे।

यह एक बुद्धिमान् तथा आदरणीय देशी सज्जन हैं और इन्हें मारवाड़ की पूरी जानकारी है। पोलीटिकल् एजेन्ट जो सम्मति दरबार को दते, उसका समर्थन करने में ये सदा अग्रसर रहे हैं।

उदयपुर, ४ जून १८६५ } (ह०) एफ एफ० निक्सन, पोलीटिकल् एजेन्ट

इसी वर्ष में पोकरण के ठाकुर ने जब हुक्मनामे का कर देने से इनकार किया तब श्रीदरबार साहिबने आषाढ़ वद २ को अपनी आज्ञा पालन करानेके लिये महताजी को काम देकर भेजा, इन्होंने वहाँ पहुँच कर ठाकुर को बहुत समझाया तथा भय भी दिखाया, जिससे ठाकुरने अपना हित जानकर श्रीदरबार की आज्ञा के अनुकूल हुक्मनामे का कर देना स्वीकार किया।

सं० १६२४ में श्रीन्दरबार साहिब की आज्ञानुसार य पोलीटिकल् एजेन्ट एफ० एफ० निक्सन के साथ दौर में गये, वहां पर इन्होंने साहिब को बहुत सहायता दी, जिससे प्रसन्न हो उक्त साहिब ने जो सर्टिफिकेट दिया था, उसकी नकल निम्न लिखी जाती है।

Copy of a certificate given to Mehta Bijey Singhji by Political Agent F F Nixon.

---

This is to certify that Mehta Bijey Singh was in attendance upon me on a tour into Meywar He is an excellent native official and a very brave fellow He has been most useful to me in obtaining intelligence, etc.

(Sd ) F F Nixon

Erikpura
14th June 1860
*Political Agent*

एफ एफ० निक्सन साहिब के सर्टिफिकेट का भाषान्तर।

मैं प्रमाण देता हूँ कि मेरे मेवाड़ के दौरे में मेहता विजयसिंहजी मेरे साथ थे। ये बड़े ही उत्तम न्शी आफी

सर और मीरपुरुष है। वाक़फ़ियत हासिल करने में ये मेरे बहुत ही उपकारक हुए।

( द० ) एफ़० एफ़० निक्सन,
पोलीटिकल् एजेन्ट.

सं० १९२५ के कार्तिक शुक्ल ५ ( पञ्चमी ) के दिन श्रीदरबार साहिब ने महताजी को दीवानगी का दुपट्टा प्रदान किया, सो माघ शुक्ल ५ ( पंचमी ) तक इन्होंने दीवानगी का काम किया।

फिर इसी वर्ष में ज्येष्ठ सुदी २ (द्वितीया) के दिन श्रीदरबार साहिब ने दीवानगी का ओहदा लालसे करके अकेले महताजी को ही काम करने की आज्ञा दी, उस कार्य को सं० १९२६ के आश्विन शुक्ल १० तक करते रहे।

इसी वर्ष के माघ शुक्ल ५ (पञ्चमी) के दिन श्रीदरबार साहिब ने अदालत फौजदारी का भी काम करने की इन्हें आज्ञा दी, उस काम को इन्होंने सं० १९३६ तक किया था।

सं० १९२८ में उस आफ़िशियेटिंग पालीटिकल् एजन्ट जे सी ब्रुक् साहिब ने महताजी की कार्यकुशलता से प्रसन्न होकर जो सर्टिफिकट इन्हें दिया, उसकी नक़ल नीचे दीजाती है।

Copy of a certificate given to Mehta Bijey Singhji,
by the late Officiating Political Agent
J C. Brooke,

---

Bijey Singh Mehta has been known to me for many years, first as the Vakil with the late Major Malcolm and subsequently as Minister and Musaib of Jodhpur He is an able and energetic man and one of the few who are capable to administer the affairs of the State. He is opposed to the old Marwar Party and is himself a foreigner He is well thought of and a clever man.

(Sd ) J C. Brooke,

Abu
10th Sept 1871 } *Late Offy Political Agent*

भूतपूर्व ऑफिशिएटिङ्ग पोलीटिकल एजेन्ट जे० सी० ब्रुक साहिब के सर्टिफिकेट का भाषान्तर।

मैं महता बिजयसिंहजी को बहुत वर्षों से जानता हूं। ये पहिले भूतपूर्व मेजर मालकम् के पास वकील थे और पीछे जोधपुर के मन्त्री और मुसाहिब रहे। ये एक योग्य तथा फुर्तीले पुरुष हैं। ये उन थोड़े मनुष्यों में से एक हैं कि जो राज्य के कार्य करने की योग्यता रखते हैं ये पुरानी मारवाड़पार्टी से विरुद्ध हैं और स्वयं भी विदेशी

हैं। ये बड़े चतुर हैं और इनके विषय में लोगों के ख्यालात अच्छे हैं।

(द०) जे सी ब्रुक्,

भूतपूर्व ऑफिशिएटिङ्ग पोलीटिकल् एजन्ट.

इसी वर्ष में श्रीदरबार साहिब ने महताजी को कप्तान ए डब्ल्यू रॉबर्ट्स असिस्टेन्ट एजन्ट गवर्नर जनरल् राजपूताना के साथ सहायता के लिये भेजा, तदनुसार इन्होंने उक्त साहिब के साथ जाकर सहायता दी और उसे प्रसन्न किया वह उसके निम्नलिखित सर्टिफिकट से प्रसिद्ध है।

**Copy of a certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Captain A. W. Roberts, Assistant Agent Governor-General Rajputana.**

---

CAMP DEYROORI,

*Nal Paglia, 7th January, 1871*

Mehta Bijey Singh has been the Marwar Vakil with me in the Nal Paglia Camp, he has been most courteous on all occasions and attended most kindly to the wants of my Camp

(Sd.) A. W. ROBERTS,
CAPTAIN
Assistant Agent Governor General,
*Rajputana*

भाषान्तर।

कम्प दमूरी,
नाख पागलिया
ता० ७ जनवरी स० १८७१

महता विजयसिंहजी मेरे पास नाख पागलिया कम्प में मारवाड़ वकील रहे। ये हरसमय बहुत सुशील थे और अत्यन्त कृपासे मेरे कम्प की आवश्यकताओं पर ध्यान देते थे।

( द० ) ए० डब्ल्यू० रॉबर्ट्स कप्तान्,
असिस्टन्ट एजन्ट गवर्नर जनरल् राजपूताना

स० १९२८ के आषाढ़ मास में द्वितीय महाराजकुमार श्रीजोरावरसिंहजी ने अपने चित्त में कुछ और ही विचार करके प्रसिद्ध में श्रीजीवणमाता के दर्शन का निमित्त दिखाकर श्रीदरबार साहिबों से नागोर में ठहरने की आज्ञा माँगकर जोधपुर से रवाना हुए, परन्तु इसके पहिले ही गाँव म्याद, मारोठा और हरसालाव के ठाकुरों की अनुचित सम्मति से इन्होंने नागोर पर जबरन कब्जा करने का अपने दिलमें ठान रक्खा था, तदनुसार उपरिलिखित ठाकुरों की सहायता से उन्होंने वैसा ही किया। इस कामसे श्रीदरबार साहिब पालीटिकल एजन्ट तथा एजन्ट, गवर्नर जनरल ये तीनों बहुत ही अप्रसन्न हुए, तब श्रीदरबार साहिब ने महता विजयसिंहजी को

जोरावरसिंहजी को समझा कर अपने पास लाने की आज्ञा दी, तदनुसार महताजी जोधपुर से कुछ फौज लेकर रवाना हुए और रास्ते में और भी फौज इकट्ठी करते हुए आसोप कुछ दिन ठहर कर मूंडवे पहुंचे।

इस समय श्रीदरबार साहिब ने महताजी के पास स्वकरकमललिखित जो खास रुक्का भेजा उसकी नकल यह है।

॥ श्रीनाथजी ॥

मेता विजेमलकस्य सुप्रसाद बाचजे, तथा थारो आवणो नागोर कांनी हुवो है सु सारी तरहसूं बंदोबस्त करजे, दूजा समाचार आलमसिंघरा कागसूं जांणजे मांरी मरजी है असाढ सुद १२

उस समय वहीं पर मुसाहिब आलालालजी श्री मोती-सिंहजीका पत्र इनके पास पहुंचा उसकी नकल निम्न लिखित है।

॥ श्रीनाथजी ॥

सिद्धश्री फौजराजेरा शुभस्थाने महताजी श्रीविजय सिंहजी जोग्य श्रीजोधपुर था लालजी श्रीमोतीसिंहजी लि ॥ जुहार बांचसी तथा आजदिन आसोपरा डेरारा कागमाय लोग बागरी हाजरी सूधा आया सु श्रीहजूर में आखर आखर मालम करादिया, सु पाछो फरमावणो

हुयो है न हाल थां कन आदमी थेड़ो कम है सु विजय सिंह ने लिखदे के हाल ये पलायन फिसाद कीजो मती, ने कालदिन इरा भीमी साहिबाँरा न फोजरा लागरा मुलाजीरे मंदिर हुसी, सु सारा लागरी हामरी हाय परसूँ अठासू कूच फौजरा हाय जावसी सु जाणसी और आ ध पलायन फिसाद कर आ राजन री मुकालबा करणारी दबायती है, और अमेन्ट साहब बहादुर कने हाल वर्णारो वकील कोइ आयो है नहीं सु जाणसी और नागोर में सिरदार वगैरे है तिणाँरी हामरी भणी सु विगतवार मालम कर दीनी है, सु जाणसी और आदमी घोड़ाँरी भीड़ भाड़ नागोर में किणी है, सो विगत लिखसी और काम काज लिखसी पाछो कागद तुरत देसी, और भी हजूर साहब फरमायो है क रावरा ऊपर फदास छापा देवे तो गिस्त में घाड़ा बेलियों रो जावता राखजो और आसोप ठाकुरों नांवें कागद ने खास रुक्का मलीज गया है, सु पिछोने राज साथे खलेसी, भो कागद भी हजूर साहबों रे रूबरू लिखिया है सुजाणसी, बाकी विगत वार समाचार लारामू लिखसू सो जाणसी सं० १८२८ रा असाढ़ सुदि १५।

महताजी कुछ दिन वहां ठहर कर और भी फौज एकत्रित करते रहे, इस कारण कि महाराजकुमार जारावरसिंहजी स्वयं भयभीत होकर नागौर का किला छोड़ देंगे, परन्तु उन्होंने इस भय से किला न छोड़ा।

इसी अरसे में श्रीदरबार साहिब व पालीटिकल् एजेन्ट बहुतसी फौज लेकर मूंडवा पहुंचे और श्रीदरबार साहिब ने उनको समझाने के लिये कुचामण ठाकुर केसरीसिंहजी, महता विजयसिंहजी, पं० शिवनारायण शर्मा और सिंघवी समर्थराजजी को भेजा। इन्होंने वहां आकर उनको बहुत कुछ समझाया पर वे न माने, तब दूसरी बार पोलीटिकल् एजेन्ट पूर्वोक्त चारों को साथ लेकरके जोरावरसिंहजी के पास गये और उन्होंने महाराजकुमार को समझा कर मूंडवा से श्रीदरबार साहिब के चरणकमलों में उपस्थित किया।

फिर श्रीदरबार साहिब नागौर पधारे और वहां की हुकूमत का अधिकार महता विजयसिंहजी के पुत्र सरदारसिंहजी को दिया।

लाडू ठाकुर ने महाराजकुमार जोरावरसिंहजी को अनुचित सलाह दी थी तथा नागौर के किले में से कुछ सामान भी अपने गाँव भेज दिया था, इस अपराध का दण्ड देने के लिये महताजी को श्रीदरबार साहिब ने ७००० ( सात हजार ) फौज देकर लाडू पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी, इन्होंने वहां जाकर आठ दिन तक लड़ाई की, अन्त में ठाकुर गढ़ी छोड़कर भाग गया, तब इन्हों ने लाडू पर अधिकार कर लिया। इस सेवा से प्रसन्न होकर श्रीदरबार साहिब ने स्वहस्तलिखित जो खास रुक्का दिया, उसकी नकल यह है।

॥ श्रीनाथजी ॥

मेता विजेमलकस्य सुमसाद वाचजे तथा खाटूरी गढ़ी कायम कीधी जिण में तेहदिल होय निरंतरपणा सूँ बंदगी कीवी ज्यूं ही मालुम हुई, जमेखातर राखजे, थांरी मरजी है परदासत रेसी, मादवा सुद ८ ।

जब महताजी ने श्रीदरबार साहिब के प्रतापसे खाटू पर अधिकार किया, उस समय उपरिलिखित खास रुक्के के पहिले मुसाहिब आला, रावराजा मोतीसिंहजी और महता आलमसिंहजी ने श्रीदरबार की आज्ञा से महता विजयसिंहजी के पास जो पत्र भेजे थे उनकी नकलें निम्नलिखित हैं ।

॥ श्रीजलंधरनाथजी ॥

॥ श्रीमहाराजाजी ॥

(Sd.) L. M S.

स्वारुप श्री महताजी श्री विजयसिंहजी जोग्य जोधपुर था रावजी श्री मोतीसिंहजी लिखावतं जुहार बंचावसो, अठारा समाचार श्री जीरा तेज प्रताप सूं भला है, रामरा सदा भला चाहीज, अपरंच कागद रामरो इर्णों दिनों में आयो नहीं सो देसो, और खाटू खाली हुई सु वो रामरा कागद सूं बाकबी हुईज ने आज श्री हजूर फरमायो है क उठारे बंदोबस्त वास्ते भलो आदमी राखदीजो,

लाग बाग चठारा बंदोबस्त वास्ते चाईजे सु रास्त दीमा, वाकी सिरदारांरी आसामियां ने सील देखी मुनासिब तुले जिणोंने सील देसो, उठे रास्त दसो, ने राज कागद बांचत समां तुरत भादा ग्युं अठे आवसो, मज पदीरी करावसो नहीं, श्रीहजूर सु पूरी ताकीद कर माई है काम जरूरी है सं० १६२६ रा भादवा सुद ७।

॥ श्रीमच्छभरनाथजी सत्य छै ॥

॥ श्रीमहाराजाजी ॥

( श्रीदरबार साहिब के हस्ताक्षर में )

म्हारी मरजी
है थेसारा काम
हुकम माफक करोगे
सताब से हाजर
होसी।

स्वास्प श्री सरब आपमा विराजमाने पूज मेवाजी माजा जी श्री ५ श्री विजेसिंघजी च॥ नु जोधपुर या मदा हुकमी मता जोरावरसिंघ लि ॥ सवा मुजरा अवधारसी अठारा समाचार भी  श्रीरा तज प्रताप सु भला है आपरा सदा भला चाईजे अपरंच कागद आपरा लाद् फत उमोंग आया सुं श्री हजूर मालम हुवा, पाछा फुरमाया,

भिजेसिंघरा भरोसा मुजब बंदगी कीवी, मांरी मरजी है, इमें भठे ही काम है ने क ही समाचार फुरमावणा है सुं कागद पोथा सचो चढ सिवाव जोधपुर हाजर हूण रो फरमायो है, ने उठे खारे खाद् सिरकारी घोड़ा पाळा न नागोर माटीरा सिरदार भमीवां थोर मुनासब तुल भिणोंने राख देजो, ने एक आपणा भलो आदमी राख देसी ने पूनमचदमी ने उठीरा सिरदारों ने सीखदेसी और खाद् फौजमें सिरदारोंरी आसामियांने बेड़ा पाछा बंदगी कीवी, भिणोंरी हामरी मालम हुई सु फुरमाव णारा नांव सुं सारोंने इण कागद मूं शुदी शुदी खातर करदिगबसी, ने खास रुक्का, खास परवांना, आपरी याद मुजब सारोंरे सिखीज जावसी इणोंरी देर हुसी नहीं और कायमखांनी हिन्दुस्तांमी काम आया जिणांरे गांवरी ने सबाईसिंघजीरे रेख माफरी ने मुकनखाखजी सपतसिंघजी और फौज में काम आया मस्मी हुआ जिणांरी वरदासत परवरस आसीबका आप भठे आयांसू आपरी अरज मुजब सारोंरे हुय जावसी, सारोंने खातर कर देसी श्रीहजूर मूं मरजी सू फुरमायो है सु लिखणा मुजब बंदोबस्त कर सिताबमू हाजर हुसी सं० १८२८ भाद्वा सुद २।

सं० १८२८ के कार्तिक शुक्ल १४ का श्रीदरबार साहिब न दीवानगी का काम महताजी का सौंपा, उसको सं० १८३१ क फाल्गुन शुक्ल १० तक इन्होंने किया।

संवत् १९२९ के माघ शुक्ल १४ का श्री श्री १०८ श्री श्री महाराजाधिराज महाराजाजी श्री तख्तसिंहजी साहिब बहादुर जी० सी० एस० आई० का स्वर्गवास होन पर उनके ज्येष्ठ पुत्र सर्वगुणसंपन्न महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री यशवन्तसिंहजी साहिब बहादुर ने सिंहासनारूढ़ होकर अपने पिताजी के विश्वासपात्र दीवान महता विजयसिंहजी को उसी अधिकार पर रखकर इसी वर्ष के चैत्र शुक्ल १२ ( द्वादशी ) के दिन इनको सुवर्ण का पादभूषण प्रदान किया और ताज़ीम देकर अपनी पूर्ण प्रसन्नता सर्वसाधारण में प्रकट की।

श्री दरबार साहिब ने अपने पूज्य पिताजी के स्वर्गवास होने के बाद अपनी राजधानी के निवासी समस्त प्रजागण को मिष्टान्न भोजन कराने की आज्ञा महताजी को दी, तदनुसार इन्होंने नगरनिवासियों को फाल्गुन मास में पक्व पकान्न से तृप्त करने में बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया, इस कार्य की उत्तम व्यवस्था को देख श्री दरबार साहिब अत्यन्त प्रसन्न हुए।

इन महताजी का अपने सम्बन्धियों के साथ भी इतना हद स्नेह रहता था कि फौजबख्शी सिंघवी फौजराजजी ( जो मारवाड़ के मुत्सद्दियों में अग्रगण्य तथा पूर्ण स्वामिभक्त थे ) का देहान्त बहुत वर्ष पहिले होगया था

तथापि उनकी योग्यताके अनुसार कोई बड़ा काम उनके पीछे नहीं हुआ था, इसलिये महताजीने पूर्ण सहायता करके मिठाई की शहरसारणी की अर्थात् नगरनिवासी सकल जातिके मनुष्यों को मिष्ट पत्र पकान्न से भोजन कराकर सन्तुष्ट किया।

इन महताजीकी स्वामिभक्ति और योग्यता के कारण कर्नल् जे० सी० ब्रुक् एजेन्ट गवर्नर जनरल् ने प्रसन्न होकर इनको उस समय जो सर्टिफिकेट दिया, उसकी नकल यह है।

**Copy of the certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Colonel J C. Brooke, Agent Governor General, Rajputana.**

---

Mehta Bijey Singh Minister of Jodhpur has been known to me for the last 20 years ever since Major Malcolm was Political Agent at Jodhpur He was held in high esteem by that officer and in my opinion is one of the ablest of the Marwar officials. He is a clever and intelligent gentleman and one of the most influencial men in the country I trust he will use his ability and position for the welfare of the state

( Sd ) J C. Brooke,
Colonel,

Abu
*Dated 22nd June 1873* } *Late Offg* A. G G

भाषान्तर ।

मैं जोधपुरके मन्त्री मेहता विजयसिंहजी को २० (बीस) वर्षों से, जब से कि मेजर माल्कम् जोधपुर के पोली-टिकल् एजन्ट थे, जानता हूँ। यह ऑफीसर ( मेजर माल्कम् ) इनका बहुत मान रखते थे और मेरी सम्मतिमें ये एक मारवाड़ के सबसे अधिक योग्य ऑफीसरों में से हैं। ये होशियार और बुद्धिमान् सज्जन हैं और ये इस देश में सबसे अधिक प्रभावशाली पुरुषों में से हैं। मुझे विश्वास है कि ये अपनी योग्यता और इनेका राज्य की उन्नति के लिए काममें लावेंगे।

( ह० ) जे० सी० ब्रुक कर्नल,

भूतपूर्व ऑफिशिएटिङ्ग एजन्ट गवर्नर जनरल,

राजपूताना

सं० १६३० के आषाढ़ बदी १२ (द्वादशी) के दिन श्री दरबार साहिब ने प्रसन्न होकर जोधपुर परगने का गाँव सौंदीवाड़ा जिसकी रेख ३०० ) ( तीन हज़ार ) की थी, प्रदान किया। यह गाँव सं १६३१ के वैशाख सुदी १४ तक मेहताजी के अधिकार में रहा।

और उस समय में महाराजा साहिब ने मो स्वास रुक्का प्रदान किया, उसकी नकल यह है।

॥ भीनायजी ॥

मेता विजेमल सर्दारमलकस्य सुमसाद माँचजा तथा बंदगीसू महरबान हाय जाधपुररा गाँव दौलीवाड़ो पट्ट दियो है मु सं० १६३० री साल उनालूया लीयां जावजा मारी निरतर मरजी है जमारलातर रासमा सं १६३० रा आपाढ़ वदि १२।

सं० १६३१ के कार्तिक शुक्ल ७ ( सप्तमी ) के दिन श्रीदरबार साहिब न कृपा करके इनक पुत्र सरदारसिंहजी को सुवर्णका पादभूषण ( साने की कड़ी ) प्रदान करक सम्मानित किया।

ठिकाने मींदष ठाकुर सपतसिंहने श्रीदरबार साहिब की आज्ञा लकर बाँसाक हुलतानसिंह को अपना दत्तक पुत्र बनाकर उत्तराधिकारी किया था। सपतसिंहजी का दहान्त होनपर उनकी विधवा स्त्रियाँ की सुलतानसिंह स अनबनत हागइ, ता उन्होंन सुलतानसिंह का गाद न रखकर दूसरे का लना चाहा, तब श्रीदरबार साहिब न सुलतानसिंह की सहायता क लिय सं १६३२ क वष में महताजी का फौज दकर वहाँ भजा, इन्होंन वहाँ जाकर ठकुरानियाँ का तथा उनक सहायकों का बहुत समझाया, जब उनका मानन न दखा ता युद्ध करना आरम्भ किया। एक महीन तक परस्पर युद्ध हुआ,

भगत में उन विरोधियों का जीतकर मुलतानसिंह का वहाँ का अधिकार साप सना स जोधपुर भाय ।

संवत् १६३२ क मध में जब सरकार गवर्नमेन्ट की ओर स श्रीदरबार साहिब का जी० सी० एस० भाई० की उपाधि मिली तब उस उत्सव में महताजी न महाराजा, रावराजा, सर्दार, मुत्सद्दी तथा सैनिक आदि राज्य के समस्त कर्मचारियों सहित श्रीदरबार साहिब का माघ सुदी २ ( द्वितीया ) के दिन कायस्थान क महल में निमन्त्रित करके विविध पकान आदि षट्रस भोज्य पदार्थों स सन्तुष्ट किया ।

विक्रम संवत् १६३३ क माघ शुक्ला १५ ( पूर्णिमा ) क दिन श्रीदरबार साहिब ने महताजी पर प्रसन्न हाकर दीवानगी का अधिकार इनका सापा, सा यह पद संवत् १६४६ क भाद्रपद बदी १२ ( द्वादशी ) को इनका स्वर्गवास हुआ तब तक इन्हीं क अधिकार में बना रहा ।

इस समय पाठक महाशयों को मुझे यह भी स्फुट रीति से ( साफतौर पर ) सूचित कर दना अनुचित न हागा कि इसक पहिले दीवान का राज्य के सब कार्यों में पूर्ण अधिकार रहता था, परन्तु महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्रीयशवन्तसिंहजी साहिब बहादुर क राज्यसिंहासनाधिरूढ होन पर कुछ

समय के बाद पहिले की तरह दीवान को सब कामों में पूर्ण अधिकार न रहा, किन्तु श्रीदरबार साहिब के सहोदर महाराज श्रीप्रतापसिंहजी साहिब बहादुर मुसाहिब आला नियत हुये, जिन का राज्य का सर्वाधिकार था, इस कारण यद्यपि दीवान के अधिकार में माल के तमाम महकमे थे अर्थात् राज्य के मुख्य अर्थसचिव (Finance Minister) दीवान ही थे तथापि ये पुराने अनुभवशील तथा पूर्ण स्वामिभक्त होने के कारण राज्य का प्रत्येक कार्य इनकी सम्मति से होता था।

महताजी के कामों से प्रसन्न होकर पोलीटिकल एजेन्ट मेजर सी० के० एम० वाल्टर साहिब ने चिट्ठी व सर्टिफिकेट भेजा उनकी नकलें नीचे लिखी गई हैं।

Copy of the letter from Major C. K. M. Walter
Political Agent Jodhpur to Mehta
Bijey Singhji.

---

CAMP BURR,
*October 26th 1877*

MY DEAR SIR,

I have very much pleasure in sending you the certificate you asked for If at any time I can be of service to you I shall be very glad. I hope you

will long continue in your present position. It should be your aim as far as possible to conciliate all the parties in the State and always remember my advice to actively engage the leading Thakurs in the just of the country No time should now be lost in starting works with a view of giving employment to the people of the country for I find they are leaving in larger numbers than I supposed.

With all good wishes

Believe me
Yours faithfully
( Sd. ) C. K. M. WALTER.

चिट्ठीका भाषान्तर ।

कैम्प पर,
ता० २६ ऑक्टोबर १८७७

प्रिय महाशयजी !

मैं अत्यन्त प्रसन्नतासे आपका सर्टिफिकेट भेजता हूँ जो कि आपने मांगा था । यदि मैं किसी समय आपके काम का होसकूं तो मुझे बहुत हर्ष होगा । मैं आशा करता हूँ कि आप अपने वर्तमान पदपर चिरस्थायी होंगे । जहाँतक सम्भव हो आपको चेष्टा राज्यकी सब

पार्टियों को प्रसन्न करने का होना चाहिये और आप मुख्य २ ठाकुरों को देशकी भलाई के लिये शीघ्र ही तत्पर रखनेकी मेरी सम्मति को सदा स्मरण रक्खें। देशके मनुष्यों को नौकरी देने के लिये कार्य्यों को आरंभ करने में अब विलम्ब न होना चाहिये, क्योंकि उन ( बेकाम पुरुषों ) की संख्या जितनी मैं जानता था, उससे अधिक ज्ञात होती है। आप मुझे अपना पूर्ण शुभचिन्तक और सच्चा मित्र समझें।

( द० ) के० सी० एम० वाल्टर

Copy of the certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Major C. K. M. Walter Political Agent, Jodhpur

---

Mehta Bijey Singh is a very old and much valued official of the Marwar State Shortly before the demise of the late and when the present Chief was carrying on the government of the country he was appointed Diwan and conducted the duties of that high office at a most difficult period in, to my mind, a most satisfactory manner He resigned office for a time owing to intrigues to which it i not here necessary to advert, and was reappointed a year ago He is the most clever man thoroughly

acquainted with the State, the Thakurs, and the people. He is much respected and is an exceedingly clever Financier He is at present time the man best fitted for the important post he holds and I trust that on my return to India I shall find him State Diwan of Marwar

(Sd.) C. K. M. Walter,
Major,

Camp Bhar, October 26th 1877 } *Political Agent Jodhpur*

वाल्टर साहिब के सर्टिफिकेटका भाषान्तर।

महता विजयसिंहजी मारवाड़ राज्य के बहुत पुराने और प्रतिष्ठित ऑफीसर हैं। ये स्वर्गीय महाराजा के बैकुण्ठ वास होने के कुछ पहिले (जब कि वर्तमान महाराजा देश का शासन कर रहे थे) दीवान नियत किये गये। मेरी सम्मति में इन्होंने उस कठिनकाल में इस उच्चपद के कर्तव्यों का सन्तोषजनकता से पालन किया। इन्होंने थोड़े समय तक कुछ कपट प्रबन्धों (साजिशों) के कारण (जिनका उल्लेख यहां पर करना ठीक नहीं है) पद (ओहदा) त्याग दिया था, अब एक वर्ष हुआ फिर नियत किये गये हैं। यह ही सब से होशियार पुरुष हैं और राज्य को, ठाकुरोंको तथा प्रजा को पूर्णरूप से

जानते हैं। इनका बहुत आदर होता है और ये बहुतही दक्ष अर्थसचिव हैं। ये जिस उच्च पदपर नियत हैं उस पद के इस समय में अत्यन्त योग्य हैं। मुझे विश्वास है कि मेरे भारत में लौट आने पर मुझे ये ही मारवाड़ के दीवान मिलेंगे।

केम्प पर,
२६ ऑक्टोबर १८७७

( द० ) सी० के० एम०
वाल्टर मेजर,
पोलीटिकल् एजेन्ट जोधपुर

सं० १९३४ के माघ वदी ६ के दिन महाराजकुमार का जन्मोत्सव हुआ, उस हर्ष को प्रकट करने के लिये महतानीने श्रीदरबार साहिबों से प्रार्थना की तो श्रीमहाराजा साहिब ने इनकी प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार करके सब महाराजा, रावराजा, सर्दार, मुत्सद्दी तथा अनुचरों के सहित फाल्गुन वदी ५ को इनके स्थान को सुशोभित किया और वहीं पर भोजन करके इन्हें सम्मानित किया।

संवत् १९३४ के चैत्र वदी १४ (चतुर्दशी) को श्रीगवर्नमेन्टने महताजी की राजभक्ति से प्रसन्न होकर श्रीदरबार साहिब की सम्मति से इनको "रायबहादुर" की उपाधि (पदवी) प्रदान की, जिस सनद की नकल यह है।

To

Mehta Vijay Singh,

Diwan of H. H. the Maharaja of Jodhpur

In recognition of your loyalty and excellent services I hereby confer upon you the title of "Rai Bahadur" as a personal distinction

(Sd) LYTTON

VICEROY AND GOVERNOR-GENERAL OF India.

FORT WILLIAM
1st January 1878

भाषान्तर।

महता विजयसिंहजी,

दीवान-हिज हाइनेस महाराजा जोधपुर

मैं आपकी राज्यभक्ति और अच्छी नौकरियों के लिहाज से आपको इस पत्रद्वारा आपही की प्रतिष्ठा के लिये "रायबहादुर" की उपाधि प्रदान करता हूं।

(द०) लिटन,
वाइसराय तथा गवर्नर
जनरल हिन्द

फोर्ट विलियम
१ जनवरी १८७८

जोधपुर के पोलीटिकल् एजेन्ट डी० डब्ल्यू० आर० बार ने महताजी को जो सर्टिफिकेट दिया उसकी नकल यह है।

Copy of the certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Mr D W R. Barr Political Agent Jodhpur

---

MOUNT ABU
*25th October 1879*

MY DEAR SIR,

Before leaving Rajputana I wish to put on record my sense of the value of your services to the Jodhpur State during the eighteen months I have officiated as Political Agent of Marwar

When I came to Jodhpur I found you employed as the Dewan and although many changes and alterations have since been made you have continued in that post to the advantage, as I am assured, of H. H the Maharaja and his state You have spent the greater part of your life in the service of the Marwar Durbar and there is no one in the State who is so well acquainted with all the matters

relating to its administration as you are. You have a complete knowledge of the Thakurs and your influence with them is great—while in matters of finance and revenue you are thoroughly informed with all your knowledge which is, as you know power you are in a position to continue to be of immense service to Marwar and I hope that you will do your best to maintain the present system of government. You are aware that the only thing required to secure the prosperity of Marwar is unanimity of counsel. There remains much to be done, to pay off debts to establish justice and to secure tranquility before we can hope to see Marwar in a satisfactory state But if the members of the Durbar will only continue to act in concert and with determination, all these desirable ends will in time be accomplished It will give me great pleasure to hear that you have been associated with the reforms which the State so much requires, from the beginning to the end. I shall always remember the period of my charge of the Marwar Agency with pleasure and my interest in Marwar will not end with my transfer from the State. I hope occasionally you will write t me and tell me how you are

getting on You must always remember me as a friend and believe me,

Yours very truly,

(Sd.) D W R. Barr.

To

Rai Bahadur Mehta Bijey Singh.

भाषान्तर ।

पहाड़ आबू,

२५ ऑक्टोबर १८७६.

प्रिय महाशयजी !

मैं राजपूताने से चलेजाने के पहिले मेरे मारवाड़ में ऑफिशियेटिङ्ग पोलीटिकल् एजेन्ट का काम करने के समय में तुमने अठारह महीनों में जोधपुर राज्यकी जो अमूल्य सेवाएँ की हैं, उन के विषय में अपना मन्तव्य प्रकट करना चाहता हूँ ।

जब मैं जोधपुर में आया तब आपको दीवान पाया, यद्यपि उस समय के बाद बहुत कुछ परिवर्तन होगया है तथापि आप उसी पद पर हैं और मुझे विश्वास है कि इससे महाराजा तथा उनके राज्य को बहुत लाभ हुआ है । आपने अपने जीवन का अधिक भाग मारवाड़ दरबारकी सेवा करने में व्यतीत किया है और आपके

समान राजकार्य विषय की बातोंका पूर्ण ज्ञान रखनेवाला इस राज्य में और कोई नहीं है। आपको ठाकुरों का पूर्ण ज्ञान है और आपका उनपर प्रभाव भी बहुत है तथा आप द्रव्यरक्षा ( Finance ) व आयव्यय ( Revenue ) विषयक बातों के पूरे जानकार हैं। आप जानते हैं कि इन सब बातोंका ज्ञान एक प्रकार का बल है। आप मारवाड़ की बहुत सेवा करते रहने के योग्य हैं और मैं आशा करता हूं कि आप वर्त्तमान शासनप्रणाली को दृढ़ रखने का पूर्ण यत्न करेंगे। आप जानते हैं कि मारवाड़ को उन्नत बनाने में केवल एकमत ही की आवश्यकता है। मारवाड़का सन्तोषजनक अवस्था में देखने की आशा करने के पूर्व ऋण चुकाना, न्याय स्थापन करना, शान्ति को सुरक्षित करना इत्यादि और भी बहुत कुछ करना है। किन्तु यदि दरबार के मेम्बर केवल मेल जोल तथा पक्के इरादे से कार्य करते रहेंगे तो ये सब माननीय उद्देश उचित समय में पूर्ण होजायेंगे। मुझे यह सुनकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आप इन सुधारों में ( जिनकी राज्य को आरम्भ से लेके अन्त तक बहुत आवश्यकता है ) शरीक हैं। मैं मारवाड़ एजेन्सीका काम अपनी रक्षामें रहने के समय को हर्ष के साथ स्मरण रक्खूँगा और इस राज्य से तबदीली होने पर भी मेरा मारवाड़के साथ सम्बन्ध न टूटेगा। मुझे आशा है कि आप कभी २ मुझे पत्र लिखते रहेंगे और अपने हालात की सूचना

देते रहेंगे । आप सदा मुझे अपने मित्र की तरह स्मरण रक्खें और बिलकुल सच्चा मित्र समझें ।

( द० ) डी० डब्ल्यू० आर० चार

सवार्में

रायबहादुर महता विजयसिंहजी

**Copy of the certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Lt. Colonel W Tweeds, Political Agent, Jodhpur**

---

ERINPURA

*16th December 1881*

MY DEAR MEHTA BIJEY SINGH,

Before leaving this I do myself the pleasure of writing these few lines to you merely to give expression to the sentiments of friendly regard which have sprung up in my mind towards you personally in the course of the past year's official relationship and to say how much I hope you will meet with more and more honour and success in the service of His Highness the Maharaja to whose service and interests nearly the whole of y ur life has been so ntirely devoted.

Having made over charge of my present appointment to Colonel Powlett I intend leaving on Monday for Gwalior and have now no other duty here than that of taking leave of my friends, among the number of whom I hope you will always allow me to consider you.

With kind regards and best wishes.

I remain

Yours sincerely

(Sd.) W. Tweedie.

पालीटिकल् एजन्ट लेफ्टिनेन्ट कर्नल् डब्ल्यू० ट्वीड ने मीमपुर से जाते समय प्रसन्न होकर मेहताजी को जो सर्टिफिकट दिया था उस का यह अनुवाद है।

एरनपुर,

१६ डिसेम्बर १८८१

प्रिय मेहता विजयसिंहजी !

मैं यहां से चले जाने के पूर्व कथम मित्रता के उन भावों का जो विगत वर्ष में सरकारी सम्बन्ध से आपके विषय में मेरे मन में उत्पन्न हुये हैं, प्रकट करने के लिये तथा यह कहने के लिये कि आपको महाराणा साहिब की सेवा में ( जिनके सेवन तथा काम में आपने अपनी

प्रायः पूरी उम्र भेट करदी है) कितना अधिकाधिक मान तथा सफलता प्राप्त होने की मुझे आशा है—यह कुछ अक्षर-पङ्क्ति सहर्ष लिखता हूँ।

मैं अपने वर्तमान पद का चार्ज कर्नेल् पाउलेट को देकर चन्द्रवार को ग्वालियर जाने के लिये रवाना होना चाहता हूँ, मुझे अब यहाँ पर अपने इष्ट मित्रों से (जिनमें मुझे आशा है आप अपनी गणना करने की आज्ञा देंगे) विदा माँगने के अतिरिक्त और कुछ करना नहीं है।

प्रेमभाव और शुभ इच्छाओं के साथ

मैं हूँ आपका सच्चा-मित्र—

(ह०) डब्ल्यू० ट्रीव

वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स जोधपुर के असिस्टेन्ट रेजिडेन्ट मेजर डब्ल्यू० लॉक् ने जो सर्टिफिकेट दिया उसकी नकल यह है—

Copy of the certificate given to Mahta Bijay Singhji, by Major W Lock, Assistant Resident, W.-R. States Jodhpur

---

MY DEAR SIR,

As I am leaving Marwar on furlough I write to thank you for the help you have afforded me in all matters connected with the State

I hope when I return to India we shall meet somewhere and the meanwhile wishing you good health. Believe me

Yours very truly

JODHPUR,<br>*28th October 1886* } (Sd.) W Lock.

भाषान्तर ।

प्रिय महाशयजी !

क्योंकि मैं मारवाड़ से छुट्टी ( Furlough ) में जाता हूं इसलिये मैं आपको उस सहायता का धन्यवाद देने के लिये लिखता हूं जो आपने मुझे राज्यसम्बन्धी सब बातों में दी है ।

मुझे आशा है कि मेरे भारत में लौट आने पर अपन किसी जगह मिलेंगे । मैं चाहता हूं कि इस बीच के समय में आपका स्वास्थ्य ठीक रहे ।

मुझे अपना सच्चा मित्र समझिये ।

जोधपुर,<br>२८ ऑक्टोबर १८८६ } ( द ) डब्ल्यू० लॉक्

सं० १६३६ के श्रावण वदि ८ (अष्टमी) को महताजी के धर्मपत्नी का स्वर्गवास हुआ तब जोधपुर निवासी सकल वैश्य समुदाय का विविध मिष्ट पक्वान्न से फाल्गुन वदि ३ को भोज दिया गया, उस निमित्त श्रीदरबार साहिब ने इनके पुत्र सर्दारसिंहजी को उक्त कार्य में सहायता के लिये ७०००) (सात सहस्र) रुपये प्रदान किये।

सं० १६४३ के आश्विन कृष्ण नवमी तदनुसार ता० २१ सप्टेम्बर सन १८८७ के दिन से राज्य में एक कौन्सिल स्थापित हुई उसमें उक्त दीवान महता विजयसिंहजी भी मेम्बर (सभासद्) नियत हुए, सो ये स्वर्गवास होने तक कौन्सिल में धर्मसम्मति देते रहे।

प्रिय पाठकवृन्द ! हमारे पूर्वज धर्मात्मा महर्षियों ने मनुष्य की आयु के चार विभाग करके इनमें पृथक् २ कर्तव्य ये लिखे हैं कि—

> प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
> तृतीये नार्जितो धर्मश्चतुर्थे किं करिष्यति ॥

अर्थ ॥

जिस पुरुष ने प्रथम वय में विद्या नहीं सीखी, दूसरे में धन नहीं प्राप्त किया और तीसरे में धर्म नहीं इकट्ठा किया वह चौथे वय में क्या करेगा।

इस विचार से महताजी अब अपने धर्मसम्प्रदाय के मुख्य इष्टदेव श्रीरंगनाथजी की यात्रा करने के लिये श्री दरबार साहिब से प्रार्थना की, तब श्रीजी साहिबों ने कृपा करके सं० १६४५ में फाल्गुन वदि २ (द्वितीया) के दिन इन को पांच हजार की रेख के दो गाँव देने की आज्ञा दी।

श्रीदरबार से आज्ञा पाकर ये यात्रा करने को गये, एक मास इस धर्मकार्य में व्यतीत किया और इस यात्रा में २५०००) (पचीस सहस्र) रुपये श्रीरंगजी के उत्सवों में तथा ब्राह्मणभोजन आदि धार्मिक कार्यों में व्यय करके कृतार्थ हुए।

यात्रा से लौट आने पर श्रीदरबार साहिब की सभा में उपस्थित होकर पूर्वानुसार राजकार्य करने में तत्पर हुए।

सं० १६४६ के कार्त्तिक शुक्ला ६ (नवमी) के दिन श्रीदरबार साहिब ने पूर्व की आज्ञा के अनुसार जोधपुर परगने के दो गाँव (मासी और बीरड़ावास) इनको जागीर में दिये, जिनके हुक्म की नकल निम्नलिखित है।

नम्बर १२४७

महकमा खास श्रीदरबार राज मारवाड़।

बनाम दीवान राज मारवाड़

तथा रावबहादुर महता विजयमलजी ने गाँव २ दोय बीरड़ावास मे विरामी परगने जोधपुर रा रु १० ०)

खाका दीस तथा गाँव रायबहादुर महता विजयमल कर ग्गमल चैनमलरा र पट्ट हुआ है सु संवत् १६४४ री साल ऊनालू थीं अमल दजो गाँव में बिना हुकम सासण वाली दण न पाव, दांण मपार्बदी वगेरे पाव दरबाररा है, रेस ३१२५) १ इनायत खासवारी सं० १६४६ रा मिती फागी पत्र ८।

राजपूताने क एजन्ट गवर्नर-जनरल् कर्नल् सी० के एम० वाल्टर साहिब की दो चिट्ठियों की नकलें ये हैं।

Copies of the letters from Colonel C. K. M. Walter A. G G Rajputana to Rai Bahadur Mehta Bijey Singhji.

---

AJMER,
*1st March, 1890*

MY DEAR BIJEY SINGHJI

I have been much pleased to hear that His Highness the Maharaja has restored to you the villages which were taken from you in Sambat 193.. I am well aware of your loyalty to H. H. and of the good works you hav always done for the State

and it will always give me pleasure to hear of your well doings

Yours faithfully,

( Sd. ) C. K. M. Walter.

Agent to the Governor-General Rajputana

भाषान्तर ।

अजमेर,

१ मार्च १८९०

प्रिय विजयसिंहजी !

मुझे यह सुनकर बहुत हर्ष हुआ कि महाराणा साहिब ने आपको वे गाँव पुनः प्रदान किये हैं जो सम्वत् १६३२ में आप से ले लिये गये थे । मुझे आपकी राजभक्ति का तथा उन प्रशंसनीय कामों का, जो आप राज्य के लिये सदा करते रहे हैं, पूर्ण ज्ञान है और मुझे आपके उत्तम कामों का सुनने से सदा हर्ष होगा ।

आपका सच्चा मित्र—

( द० ) सी० के० एम० वाल्टर,

एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना

भाषान्तर ।

रगबी होटल–मैथेरन,

३० एप्रिल १८६०

प्रिय विजयसिंहजी !

मैं कुछ दिनों पहिले पंडित शिवनारायणजी को पत्र लिखते समय भूलगया था कि मैंने आपके २३ मार्च के कृपापत्र का उत्तर नहीं दिया है। विदा का प्रणाम करने के लिये जो एकवार आप से और मिलता तो मुझे बहुत हर्ष होता और मैं उस कारण के लिये बहुत उदास हूँ जो आपके आनू आने में बाधक हुआ। मैं आशा करता हूँ कि आप पुनः नीरोग होगये होंगे। मुझे वह आनन्ददायक समय जब मैं जोधपुर में रेजिडेन्ट था तथा आपके वे अच्छे काम जो आपने उस समय किये, बहुत समय तक स्मरण रहेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता करता हूँ कि मैं अपने इतने कृपालु मित्रों का विदाका प्रणाम करने के लिये लाचार होने से उदास हूँ।

आपके तथा आपके खानदान के लिये शुभ इच्छाओं के साथ

मैं हूँ आपका सच्चा मित्र–

( ह० ) सी० के० एम० वाल्टर

वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स जोधपुर के रेजिडेन्ट पावलेट् साहिब ने जो सर्टिफिकेट दिया उसकी नकल यह है।

**Copy of the certificate given to Mehta Bijey Singhji, by Colonel Percy W Powlett, Resident Western-Rajputana-States, Jodhpur**

---

JODHPUR,
*March 31st 1898*

Mehta Bijey Singh Rai Bahadur is a very old servant of the Jodhpur State and has been known to me from many years. He has been a man of remarkable ability and has often done valuable service for the Durbar The British Government appreciated his conduct so much that he was made a Rai Bahadur Of late years he has not taken a prominent part in the administration. I heartily wish that the rest of his life may be passed in health and comfort,

(Sd) PERCY W POWLETT COLONEL,
*Resident.*

भाषान्तर ।

जोधपुर,
३१ मार्च १८९२

रायबहादुर महता विजयसिंह जोधपुर राज्य के बहुत पुराने सेवक हैं और मैं इनको कई वर्षों से जानता हूं । ये असाधारण योग्यता वाले पुरुष हैं और इन्होंने बहुधा दरबार की बहुमूल्य सेवायें की हैं । ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने इनकी कार्यकुशलता की इतनी कदर की कि ये रायबहादुर बनाये गये । इन्होंने इन वर्षों में राज्यप्रबन्ध में प्रधान भाग नहीं लिया है । मैं अन्तःकरण से चाहता हूं कि इनका शेष जीवन स्वास्थ्य और सुख में व्यतीत हो ।

(ह० ) पर्सी डब्ल्यू० पाउलेट् कर्नेल्
रेजिडेन्ट.

## जाति सुधार ॥

पूर्वकाल में जयपुर के ओसवालों में जातिभोजन का कुछ भी प्रबन्ध नहीं था, न कोई स्थान जातिभोजन के लिये नियत था कि जिसमें पाकक्रिया ( रसोई ) तथा भोजन करने का सुभीता रहे और पाक भी धर्मज्ञ से ही होता था, जिस कारण धार्मिकजन वहाँ भोजन करने को नहीं आते थे तथा भोजन के स्थान में कई तरह की गपड़ सपड़ होती थीं जिनका वर्णन करना उचित नहीं, इसी कारण से उच्च कक्षा के प्रतिष्ठित पुरुष स्वयं ( खुद ) जाति में भोजन नहीं करते थे, किन्तु केवल भोजनदाता को मान देने के लिये कुछ समय तक उस स्थान को सुशोभित करके तथा अपनी सरकार के ठाकुरलोग और सेवक जनों को भोजन करवा कर लौट आते थे, इससे इस काम में भोजनदाता का बहुत धन व्यर्थ ही व्यय ( खर्च ) होने पर भी स्वजातीय धर्मात्मा तथा उच्च श्रेणी के प्रतिष्ठित पुरुषों का यथोचित सत्कार नहीं होता था।

इस अव्यवस्था को देख विचारशील महता विजय सिंहजी ने अपनी जाति के सभ्य सज्जनों को एकत्रित करके इस विषय के तमाम हानि लाभ बतलाकर उन भद्र पुरुषों की सहानुभूति से चन्दा करके बहुतसा धन इकट्ठा किया और इस द्रव्य से एक बड़ा भारी मकान

खरीद कर संवत् १९३० के फाल्गुन शुक्ल ६ (षष्ठी) के दिन उक्त स्थान का पट्टा करवा लिया ।

इनकी प्रेरणा से तथा अन्य भद्र पुरुषों के परिश्रम से यह स्थान आज दिन ऐसा उत्तम बन गया है कि जिस में सब प्रकार का सुभीता होगया है, पाकशाला में बहुत पवित्रता के साथ पाक होता है, जल के लिये बहुत ही उत्तम प्रबन्ध होगया है कि पवित्र जाति के नौकर शुद्ध कलशों से जल लाकर पाकशाला के बाहिर ही बने हुए विशाल कुण्ड में डाल देते हैं, उसी कुण्ड में से जल पाक शाला में पहुँच जाता है भोजन के समय इनकी जाति के सिवाय अन्य कोई भी नीच जाति का मनुष्य उस स्थान में नहीं आ सकता, इस कारण शुद्धता का विचार करने वाले और प्रथम श्रेणी के प्रतिष्ठित पुरुषों का भी यहां पर अपने जातिभाइयों के साथ प्रेमपूर्वक भोजन करने में किसी प्रकार का सकोच न रहा । उक्त स्थान में रसोई के, परोसने के तथा भोजन के सब बर्तन भी आवश्यकतानुसार रक्खे गये हैं और छाया के लिये भी पूर्ण रीति से प्रबंध है तथा अन्य सब प्रकार की सामग्री उस स्थान में रक्खी हुई तय्यार है यहांतक कि आवश्यकता होने पर सुई द्वारा तक बाहिर से मँगवाने की जरूरत नहीं है ।

फिर महाजनों ने अपनी जाति के विचारवान् पुरुष २ पुरुषों के साथ सलाह करके इस बात पर ध्यान दिया कि जाति में व्यर्थ व्यय अधिक हो रहा है, लोग अपनी २ अधिकता दिखाने के लिये विवाह में तथा मृतक के संस्कार में आवश्यकता से अधिक व्यर्थ ही खर्च बहुत करते हैं और कई एक पुरुष यथार्थ में धनाढ्य न होने पर भी देखादेख खर्च करके आप दुःख भोगते हैं तथा अपनी सन्तति को भी रसातल में पहुँचाते हैं इसलिये विवाह और मृतकसंस्कार में जितना खर्च जिस योग्यता के पुरुष को करना उचित है इस के सब नियम नियत हो जाने चाहियें जिससे सब को लाभ पहुँचे, यह विचार दृढ़ करके सब सम्मत्यनुसार विवाह तथा मृतक के विषय में सब नियम लिखकर सं० १९४३ के मार्गशीर्ष शुक्ल ४ (चतुर्थी) को सर्व साधारण के सामने प्रसिद्ध कर दिये और इसी वर्ष के पौष वदि ४ (चौथ) के दिन श्रीमान् मान्यवर प्रतापसिंहजी साहिब बहादुर मुसाहिब आला राज मारवाड़ की सेवा में उक्त नियमों का एक पुस्तक भेज दिया, जिस पढ़ कर श्रीमान् मुसाहिब आला ने बहुत प्रसन्न होकर हर्षपूर्वक एक आज्ञापत्र (परवा) भेजा और उक्त नियमों के अनुसार ही कार्य करने की आज्ञा दी।

स्थान तथा नियम बनजाने पर प्रथम ही ज्ञाति सं० १९४४ के माघ वदि ११ को व्यवस्था पूर्वक बहुत उत्तम प्रबन्ध से

हुई, उस दिन से आजतक सब कार्य नियमानुसार होता रहा है, आशा है कि इसी प्रकार आगे भी होता रहेगा।

## धर्मकार्य्य ।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥ १ ॥

अर्थ ॥

प्राणीका मित्र अर्थात् सच्चा सहायक एक धर्म ही है, क्योंकि जो मरने के बाद भी साथ चलता हुआ पूर्णरूप से सहायता करता है और माता, पिता, बन्धु, मित्र, पुत्र, कलत्रादि सब सम्बन्धी लोग शरीर के साथ ही नष्ट हो जाते हैं अर्थात् उनका सम्बन्ध मरने तक ही रहता है।

प्रियमित्रो ! महतामी एक सुयोग्य पुरुष, युद्धवीर, राजकार्य में पूर्ण दक्ष तथा जातिसुधारक थे, यह तो आपको उनके पूर्वलिखित वृत्तान्त से ज्ञात हो ही गया है, परन्तु अब मैं उनकी धार्मिकता के विषय में कुछ लिखना चाहता हूं। यद्यपि वे अपने धर्म कर्मों को आजकल के धर्मध्वजियों की तरह यथाशक्ति से प्रसिद्ध करना अनुचित समझते थे, इसलिये सब विदित नहीं होता, परन्तु जो काम गुप्त नहीं रह सकता था उसे देख सुनकर आप सज्जनों के आगे लिखकर पेश करता हूं।

यह उनका पक्का नियम था कि अपनी आमदनी का दशांश द्रव्य धर्म के काम में लगा देना, तदनुसार ही वे अनेक कार्यों में उक्त ( आयदशमांश ) धन को सदुपयोग में लाया करते थे, जो ब्राह्मण या साधु उनके सामने आ जाता उसे यथायोग्य द्रव्य देकर सम्मानित करते और प्रतिष्ठित जाति के लोग जो कि प्राणनाश की अपेक्षा भी याचना को बुरी समझते हैं उनमें से कोई भाग्यहीन पुरुष यदि दरिद्रता के कारण दुःखित जाना जाता तो वे उसके तथा उच्चकुल की सती बालविधवा ( जिसका कोई पोषण करने वाला न हो ) के निर्वाह के लिये उचित मासिक वेतन गुप्तरीति से पहुंचाया करते थे।

जो याचक इनके द्वारपर आता वह कभी विमुख नहीं जाता।

इनको ईश्वर में पूर्ण प्रेम था, त्रिकाल सन्ध्या नित्य किया करते, प्रातःकाल में सन्ध्योपासन करके विष्णु पूजन और विष्णुसहस्रनामादि का पाठ तो अवश्य ही करते थे तथा अन्य समय में जब अपने आवश्यक कार्य से अवकाश पाते तब फिर विष्णुसहस्रनाम के पाठ करते रहते, हवेली में नित्य ब्राह्मणों द्वारा वाल्मीकीय रामायण के कतिपय सर्गों का पाठ तथा विष्णुसहस्रनाम के पाठ हुआ करते और नियत समय पर विष्णुसहस्रनाम का दशांश हवन भी होता रहता, बीच में पांच वर्ष तक तो नित्य विष्णुसहस्रनाम के १२५००

( समाख्य ) पाठ और केशर कस्तूरी मिश्रित पायस हवि से दशांश हवन तर्पण मार्जनादि कर्म बराबर होता रहा।

प्रत्येक एकादशी के दिन सांसारिक सब कार्मों को छोड़कर रामानुज कोट के मंदिर में विधिपूर्वक व्रत करते हुए अष्टाक्षर मन्त्र का जप करते, रात्रि में जागरण कर द्वादशी के दिन प्रात काल में पायस होम करके ब्राह्मण भोजन कराने के बाद आप प्रसाद लेते ।

ब्राह्मणों को पायस क साथ उत्तमोत्तम पकान्न और अनेक शाकादि पदार्थों से तृप्त करके सन्तुष्ट करने का तो इन को बड़ा ही शौक था ।

जोधपुर में तथा अन्यत्र हरिद्वार, पुष्कर आदि पुण्य स्थलों में यथावसर इन्होंने कई बार बहुत ब्राह्मणभोजन कराया ।

वाल्मीकीय रामायण, भारत और भागवतादि की कथा यथावकाश सुना करते थे, पण्डितजनों से बहुत स्नेह रखते थे तथा दान मान से विद्वानों का प्रसन्न करते थ, इसीकारण इनकी हवलीपर देशी और विदेशी प पण्डितों का दंगल जमा रहता था ।

महतामी शुभ्कसे ता अपने कुलक्रमागत वल्लभ सम्पदाय क वैष्णव धर्मानुयायी थ, परन्तु इनकी धर्मपत्नी और साले सिंघवी फौजराजजी विक्रम संवत् १६०२ में

श्रीरामानुज सम्प्रदाय के आचार्य श्रीरंगनिवासी कोटि कन्यादान स्वामीजी श्री श्रीनिवासताताचार्यजी महाराज विशिष्टाद्वैत वैष्णव धर्मका उपदेश करते हुए जब जोधपुर में पधारकर कागे के मंदिर में ठहरे तब उन स्वामीजी से मन्त्रोपदेश ले चुके थे, इस सम्बन्ध के कारण सं० १९२१ में पूर्वोक्त स्वामीजी महाराज के मुखकमलसे महताजी को भी धर्मोपदेशरूप वचनामृत पान करने का सुअवसर मिला, उस समय महता विजयसिंहजी श्रीस्वामीजी महाराज को पूर्ण विद्वान् व महोपदेशक जानकर अपने पुत्र सरदारसिंहजी, भारमलसिंहजी और उम्मरसिंहजी तथा साले के पुत्र सिंघवी देवराजजी के साथ उनके शिष्य बने, तब से इन्होंने विशिष्टाद्वैत संप्रदायानुकूल वैष्णव धर्मका अवलंबन किया।

## रामानुजकोट ॥

पहिले जमाने में दक्षिणदेश से आनेवाले वैष्णव तथा द्राविड ब्राह्मणों के ठहरने के लिये यहां ( जोधपुर में ) कोई स्वतन्त्र स्थान नहीं था, इसलिये सिंघवी फौज राजजी ने सं० १९ ८ में फतेसागर की उत्तर तटपर कोठ रियाँ बनवाकर एक आले में श्रीठाकुरजी की चित्रसेवा रखदी थी। विक्रमाब्द सं० १९२१ में महताजी ने स्वामीजी के उपदेश से रामानुज सम्प्रदाय का अवलम्बन करने पर उसी वर्ष में शीघ्रही इन्होंने उक्त स्थान में एक उत्तम

मन्दिर बनवाकर ज्यष्ठ शुक्ला ११ (एकादशी) के दिन प्रतिष्ठा करके शुभ मुहूर्त में श्री वेङ्कटेश्वर की प्रतिमा स्थापित की और मंदिर के आगे वटकी छाया में एक सुंदर कूप खुदवाया, मन्दिर के तथा वैष्णव अतिथियों के खर्चका पूर्ण प्रबंध करके श्रीठाकुरजी की पूजन के लिये जयपुर राज्यनिवासी उत्तरीय गौड ब्राह्मण रूपराम शर्म्मा को नियत किया।

फिर विक्रम संवत् १६१ में एक और कूप खुदवा कर बँधवाया गया, जा अब श्रीठाकुरजी के रसोड़े क पास है। सं० १६३६ में श्री वेङ्कटेश की पूजा में उपयागी उत्तमोत्तम सुगन्धित पुष्प व तुलसी के लिये मंदिर के पिछाड़ी एक छोटासा मनोहर उपवन ( बगीचा ) बना यागया और उसमें पानी पहुँचाने के लिये तालाब के किनारे पर एक बड़ा कूआ बनवाकर उसपर अरहट लगाया कि जिसमें स नालियों द्वारा बगीचे की क्यारि यों में जल आया करे। उसी अरसे में बगीचे के मध्य में द्राक्षाके कुंजभवनकी शोभा को बढ़ानेवाली एक उत्तम छोटीसी कूपिका ( बेरी ) बनाई गई। बागके समीप ही द्राविड वैष्णवों क ठहरने के लिये कुछ कोठरियाँ और एक बड़ा दुग्ग तिवारा तैयार करवाया।

रामानुजकोट के पास जो फतहसागर है वह उस जमाने में केवल नाममात्र से ही सागर था, विस्तीर्ण

( लंबा चौड़ा ) इतना ही होनेपर भी गहराई में बहुत ही कम था, बरसात के दिनों में इधर उधर के जल से कुछ भरा जाता था फिर गो महिषी आदि पशुओं के पड़े रहने से वहां कीचड़ ही कीचड़ दीख पड़ता था, मनुष्यों के काम में उसका जल नहीं आता था। यह देखकर परोपकारी महता विजयसिंहजी ने इसी वर्ष में उक्त तालाब को खुदाना शुरू किया सो लगातार बराबर दश वर्ष तक उसे पूरा खुदवाकर बहुत ही गहरा बनवादिया और उन्हीं दश वर्षों में तालाब के पाट व पम्मेभी बहुत दृढ़ ( मजबूत ) बनवाकर सब प्रकार से तैयार करवादिया और जो नहर बरसात के दिनों में पहाड़ों में से गुलाबसागर में आया करती है उसकी एक शाखा फतहसागर में भी मिलादी और दूसरी एक नहर कागड़ी के पहाड़ों से सीधी फतहसागर में डालदी, जिससे अब वह वर्षाकाल में नहरों के द्वारा जल से परिपूर्ण होकर नगर को सुशोभित करता है और यदि दैवकोप से एक वर्ष तक वर्षा न हो तो भी वह सरसहृदय से अपने आश्रित जीवों को पोषण करने में समर्थ होता है।

सं० १६४८ में महताजी साहिब की जब यह इच्छा हुई कि इस मन्दिर का दिग्दर्शन बनावें तो उन्होंने अपने धर्मगुरु श्री स्वामीजी महाराजकी आज्ञा लेकर उनकी सम्मति के अनुसार द्रविड़ देश की प्रथा के तुल्य गोपुर, स्तम्भ, स्तम्भ आदि से सुभूषित बड़ा विशाल श्री बड़रामजी

का एक नूतन ( नया ) मन्दिर बनवाने का प्रारम्भ सं० १९४७ में किया, सो स० १९४८ के ज्येष्ठ सुदि १५ (पूर्णिमा ) तक यह मन्दिर सांगोपाङ्ग बनकर तैयार होगया, इस मन्दिर की प्रदक्षिणा में छोटे छोटे पाँच मन्दिर और भी हैं, १ आलवार स्वामी का, २ सुदर्शनजी का, ३ लक्ष्मीजी का, ४ गोदाम्बाजी का और ५ विष्वक्सेनजी का है तथा सामने गरुड़जी की मूर्त्ति और वेङ्कटेश के सम्मुख दाहिनी ओर दशकस्वामी तथा बाई ओर श्री हनुमानजी एवं तीन मंदिर और भी हैं।

इसी वर्ष में आषाढ़ शुक्ला ६ (षष्ठी) के दिन शुभमुहूर्त में स्वामीजी श्री श्रीनिवासताताचार्यजी महाराज के पुत्र श्रीरङ्गताताचार्यजी महाराज के करकमल से दिव्यदेश प्रथा के अनुसार उक्त नये मन्दिरकी प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे हुई और श्रीवेङ्कटेश की पूजन करने के लिये द्रविडदेश के वैष्णव ब्राह्मण नियत किये गये।

पुराने मन्दिर में श्रीहयग्रीव स्वामी तथा अपने गुरु की मूर्त्ति स्थापित करदी और मन्दिर में जिस २ मकान या वस्तु की आवश्यकता थी, उसे पूर्णकर उक्त मन्दिर श्रीस्वामीजी महाराज के भेट कर दिया।

रामानुजकोट के सार सब की पृथक् २ व्यवस्था बाँधकर इसके निमित्त ६००० ) ( छः हज़ार ) रुपयों का

वार्षिक व्यय नियत किया, उसका विभाग इस प्रकार है कि श्री ठाकुरजी के पूजन तथा भोग के निमित्त रुपया ४३ ०) और धर्मार्थ सदावरत के लिये रुपया १२० ) तथा श्री स्वामीजी की वार्षिक भेट के लिय रु ५ ०) नियत किये गये। इस प्रकार ५०००) (पांच हजार) रुपयों का वार्षिक व्यय निश्चित कर यह विचार किया कि यह खर्च सुगमता से होता चला जाय और भविष्यकाल में भी इस काम में किसी प्रकार की बाधा न पड़े ऐसा इन्तजाम होना चाहिये, एतदनुसार ही दूरदर्शी महताजी ने जितने रुपयों के कुसीद ( सूद ) से यह खर्च चल सके उतने रुपये मन्दिर के निमित्त धर्मार्थ करके उन रुपयों से गाँव भोगलावे खाकर और कुछ बेरे तथा दुकानें कार कुछ खरीद कर भेट कर दिये, जिससे पूर्वोक्त खर्च अच्छी तरह से चलता रहे।

स्वामीजी का निवास यहाँ पर न होने से उन्होंने एक "रामानुजकाव्यधर्मप्रकारिणी" सभा नियत करदी है, उसके द्वारा यह धर्मकार्य का बहुत उत्तम रीति से प्रबन्ध अभीतक हो रहा है और आशा है कि इसी प्रकार होता ही रहेगा।

महता विजयसिंहजी के सुपुत्र सरदारसिंहजी ने भी इस मंदिर की बहुत कुछ उन्नति की, श्रावण मास में ठाकुरजी के झूलने के लिये एक बहुत सुन्दर झूला

( जो कृत्रिम मनोहर पत्र पुष्पों से सुभूषित क्षेमवृक्ष की शाखा में झूलता है और जिसके दोनों ओर दो स्वर्गीय अप्सराओं की मूर्त्तियां एक हाथ से झूला देती हुई चेतन की भाँति दर्शकों के चित्त को चकित करती हैं ) बनवाया। बाग में लतामण्डपों के समीप में एक बहुत ही सुन्दर भवन बनवाया है जिसमें श्रीवेङ्कटेशजी के झूले का उत्सव होता है इस भवन के चारों ओर ( इर्द गिर्द ) जल के फैंवारे चलते हैं और दोनों ओर जल भरे कुंडों में रंग बिरंग के कमल उक्त स्थान को अत्यन्त सुशोभित करते हैं।

शरद् उत्सव के लिये बाग में तालाब के किनारे पर एक उत्तम स्थान बनवाया और रामानुजकोट में से फतहसागर में जाने के लिये घाट और घाट के ऊपर का स्थान भी उन्होंने बनवाया है।

रामानुजकोट नाथपुर में एक अवश्य द्रष्टव्य मनोहर स्थान है। इस विषय को यहाँ पर अधिक लिखना योग्य नहीं है परन्तु कोई धर्मानुरागी सज्जन किसी उत्सव के समय यदि उक्त स्थान को देखेगा तो उसे अवश्य यह स्वर्ग का एकदेश प्रतीत होगा।

संवत् १९४५ में परमकृपालु महाराजाधिराज श्री श्री १०८ श्री यशवन्तसिंहजी साहिब बहादुरने मेरे पिता पद महाराजा श्रीकिशनसिंहजी को यह आज्ञा दी कि

तुम्हारे पुत्र सरदारसिंहजी के सन्तति ( औलाद ) नहीं है सो तुम्हारे भाइयों में से किसी सुलक्षण बालक को इनका दत्तपुत्र निमत करदो और उसे तुम अपने पास रख कर सुशिक्षा से योग्य बनादो । तदनुसार उन्होंने इधर उधर शोध करके मसापगढ़ से मेरे जनक महता अर्जुन सिंहजी के साथ मुझ श्रीपुष्करक्षेत्र में बुलाकर खुद ने पसन्द किया ।

उसके बाद सं० १९४६ के मार्गशीर्ष वदि १० (दशमी) को मुझे यहाँ ( जोधपुरमें ) लाकर श्रीदरबार साहिब तथा उनके अनुज महाराज श्री मतापसिंहजी साहिब मुसाहिब आला की समक्ष उपस्थित किया । उक्त दोनों महानुभावों की सम्मति से महतामी ने मुझे अपने पास रखकर पढ़ाना आरंभ किया ।

सं० १९४६ के पौष कृष्णा १० ( दशमी ) के दिन श्रीदरबार साहिबने कृपा करके मुझे कर्णभूषण मोती प्रदान किये ।

इसी वर्ष में चैत्र शुक्ल द्वितीय ६ ( नवमी ) के दिन शुभमुहूर्त में मेरा दत्तक संस्कार हुआ और चैत्र शुक्ल १ ( दशमी ) के दिन में उपनयन अर्थात् यज्ञोपवीत धारण का संस्कार होने के कारण यथार्थ द्विज बनाया गया ।

संवत् १९४७ के पौषकृष्ण चतुर्दशी को श्रीदरबार साहिबोंने कृपा करके मुझे मोतियोंकी कंठी, कड़, दुपट्टा,

मदील, दुशाला, खीनखाप और फुलगारी का थान प्रदान करके अनुगृहीत किया।

---

संवत् १६४६ के श्रावण शुक्ला ५ (पञ्चमी) के दिन से महता विजयसिंहजी अतिसार रोगसे पीड़ित हुए। उत्तम २ वैद्यों के द्वारा उक्त रोगकी चिकित्सा करानेपर भी वह रोग पूर्णरूप से नष्ट नहीं हुआ। इसी रोगसे महताजी क्रमशः अधिक दुर्बल होगये, तब भक्तवत्सल श्रीदरबार साहिब की प्रेरणासे उनके अनुज महाराज श्री प्रताप सिंहजी साहिब मुसाहिब आला राज मारवाड़ने इनके स्थानपर पधारकर महताजीका आश्वासन दे सन्तुष्ट किया।

बाद में भाद्रपद कृष्ण १२ (द्वादशी) के दिन महताजी ने अपने चित्त को सांसारिक प्रपञ्चों से हटाकर श्री परमात्मा के चरणकमलों में लगा दिया। इस प्रकार उन्होंने ध्यानावस्थित होकर रात्रि में नव दे। बजकर पाँच मिनिट आये उस समय इस असार संसार को छोड़ कर श्री वैकुण्ठ की ओर प्रयाण किया।

यह खबर सुनकर श्रीदरबार साहिबने भी बहुत शोक किया और अपने सच्चे प्रेमपात्र के शरीर का बहुत

मानपूर्वक श्मशानभूमि में पहुँचाने के लिये दरबार तक नकारा निशान मेमन की आज्ञा दी।

उनके सुपुत्र महता सरदारसिंहजी अपने पूज्य पिता के दाहकर्म से दशगात्रविधान तक सारी क्रिया शास्त्र विधि के अनुसार भक्ति और श्रद्धा से करने के पश्चात् भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी के दिन श्रीदरबार साहिब की सेवा में पहुँचे, तब श्री कृपालु स्वामी ने इनको बहुत हाउस बैठाकर यही दीवानगी का पद तथा मेम्बर कौन्सिल का अधिकार भी प्रदान किया और सारोपाव देकर इनका मान किया।

संवत् १६५२ कार्त्तिक कृष्णा ८ (अष्टमी) के दिन महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १ ८ श्री यशवन्तसिंहजी साहिब बहादुर जी सी एस० आई के इस असार संसार से स्वर्गकी ओर प्रयाण करने के पश्चात् सर्वसद्गुणसम्पन्न उनके सुपुत्र महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १ ८ श्री सरदारसिंहजी साहिब बहादुर जी सी० एस आई० ने भी राज्यसिंहासन पर विराजकर अपने कुलक्रमागत स्वामिभक्त सचिव उक्त महताजी को पूर्ववत् उन्हीं अधिकारों पर नियत रक्खा।

यह दीवानगी का पद सं० १६५८ के आषाढ़ सुदि ४ (चतुर्थी) को महताजी का स्वर्गवास हुआ, तब तक उन्हीं

महता सरदारसिंहजी साहिब
दीवान, मारवाड़ स्टेट

वैदिक-यन्त्रालय, अजमेर

के अधिकार में बराबर बना रहा, बादमें यह ओहदा ही तोड़ दिया गया।

प्रिय पाठकगण ! महता सरदारसिंहजीने अपने पिताजी के जीतेजी तथा बादमें भी श्रीदरबार की सेवाके व धर्मके भी बड़े २ कार्य किये और श्रीदरबार की आज्ञा से युद्ध में जाकर बड़ी बुद्धिमानी के साथ वीरता दिखाई तथा कृतकार्य हुये, परन्तु उनका वर्णन करने से यह लेख बहुत बढ़जाता है तथा विजयसिंहजी के जीवनचरित्र में इनका विशेष वृत्तान्त लिखना यह भी पाठकोंको अनुचित भान पड़ेगा, इसलिये अब इस लेखको यहींपर समाप्त करके मैं सह्दय पाठकजनों से यह प्रार्थना करता हूँ कि यदि इस पुस्तक में किसी स्थलपर जा मेरी त्रुटि हो उसे क्षमा करेंगे। इतिशम्।

ओंशान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥